व्यंजना

2025-26

रजत जयंती विशेषांक

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय

दुर्ग (छ.ग.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित 'ए'+ ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह एवं प्राध्यापक/सहायक प्राध्यापकगण

प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह एवं अतिथि प्राध्यापकगण

व्यंजना

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 2025-26

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित 'A+' ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

यू.जी.सी., नई दिल्ली की 'कॉलेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस' योजना के तृतीय चरण के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने हेतु चयनित छत्तीसगढ़ का प्रथम एवं एकमात्र महाविद्यालय, केन्द्र शासन के विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विभाग की प्रतिष्ठित FIST योजना में शामिल महाविद्यालय का रसायन शास्त्र विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विज्ञान संकाय हेतु घोषित 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस'

संरक्षक एवं प्राचार्य

डॉ. अजय कुमार सिंह

संपादक मंडल

डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव

डॉ. अनुपमा कश्यप

डॉ. तरलोचन कौर

डॉ. ज्योति धारकर,

डॉ. निगार अहमद,

डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी

डॉ. लाली शर्मा,

प्रो. जैनेन्द्र दीवान

संपादन सहयोग

डॉ. रजनीश उमरे

डॉ. ओम कुमारी

डॉ. शारदा सिंह

Website : www.govtsciencecollegedurg.ac.in

Email-pprinci2010@gmail.com

अनुक्रम

1. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर - एक परिचय 03
2. प्राचार्य की कलम से 04
3. संपादकीय - डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी 07
4. छत्तीसगढ़ रजत जयंती - अक्षत श्रीवास्तव 09
5. 'छत्तीसगढ़ विकास यात्रा के 25 साल'- डॉ. के. पद्मावती 10
6. छत्तीसगढ़ की विशिष्टताएँ - राजा पटेल 14
7. छत्तीसगढ़ी जन जीवन के कुशल चितेरे : गिरीश पंकज - डॉ. लता गोस्वामी 16
8. परेतिन दाई मंदिर (बालोद) - आदित्य यादव 18
9.''श्रीपुर (सिरपुर) का प्राचीन इतिहास'' - आकाश कुमार 20
10. छत्तीसगढ़ के लोकगाथा अउ जनजातीय जीवन - आशीष कुमार जंघेल 24
11. महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं एवं प्राध्यापकों की कविताएँ 26-38
12. Chhattisgarh: A Story - Sugandha Saxena 39
13. Chhattisgarh: The Green Heart of India - Harsh Sahu 40
14. Silver Jubilee, Golden Gaps: Evaluating the
Reality of 'Mahtari Shakti' in Chhattisgarh - U Somya Reddy 41
15. 25 Years of Chhattisgarh: A Journey of Progress, Culture and Heritage - Sanjana Soni 43
16. Educational Tour to Bastar - Gita Yadu 44
17. Bhoramdev Temple - Shruti Soni 45
18. Role of students in Indian National Movement - Nishita Marar 46
19. The Story of Kannagi : The Tale of the Anklet - Nishita Marar 48
20. Chaattisgarh - Silver Jubliee - Aditi Singh 51
21. Chhattisgarh at 25: A Silver Jubilee of Identity,
Heritage, and the Sacred Legacy of Lord Rama - Dr. Rajshree Naidu 53
22. विगत पचीस वर्षों में विकास के पथ पर अग्रसर हिन्दी विभाग - डॉ. अभिनेष सुराना 55
23 बीज से वटवृक्ष तक प्रकाश की राह पर : भौतिक शास्त्र विभाग के 25 वर्षों की प्रेरक यात्रा - डॉ अभिषेक कुमार मिश्रा, ...56
24. नवाचार के साथ रसायन विभाग - डॉ. अनुपमा कश्यप 59
25. गणित विभाग की पिछले पचीस वर्ष की उपलब्धियाँ - डा. पद्मावती (विभागाध्यक्ष गणित) 60
26. सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग - डा. प्रज्ञा कुलकर्णी 61
27. मौन में बोलते संवाद : विनोद कुमार शुक्ल का साहित्यिक अवदान - डॉ. शारदा सिंह.................... 62
28. रजत जयंती पर विशेष कार्यक्रम 63

श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर : एक परिचय

स्व. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर दुर्ग जिले के ऐसे जुझारू नेता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने गुलाम भारत में विदेशी सरकार से लड़ते हुए दुर्ग अंचल में आजादी की अलख जगायी। स्वाधीनता संघर्ष से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य-निर्माण के लिये जो योगदान उन्होंने दिया है, उसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जायेगा। उनका व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करता है।

स्व. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर का जन्म दुर्ग के बेमेतरा तहसील के अंतर्गत झाल नामक ग्राम में 7 जुलाई 1901 में हुआ था। आपके पिता श्री यादव राव वामन तामस्कर कोर्ट में अर्जीनवीस थे एवं माता का नाम पुतली बाई था । आपकी शिक्षा दुर्ग तथा बिलासपुर में पूर्ण हुई तथा कानून की पढ़ाई करने इलाहाबाद गये । यहाँ पर आप गांधीवादी नेताओं के सम्पर्क में आये और विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने लगे । इसी समय 1921 में असहयोग आंदोलन के बहिष्कार कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आप कानून की पढ़ाई छोड़ कर अपने ग्राम वापस आ गये । आंदोलन समाप्त होने के पश्चात पुनः पढ़ाई प्रारम्भ कर 1927 में नागपुर से कानून की डिग्री लेकर वकालत का पेशा अपनाया किन्तु आपका मन देशप्रेम में रम चुका था, इसलिये 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूद पड़े।

नमक कानून की तरह छत्तीसगढ़ में जंगल कानून तोड़ने का सत्याग्रह हुआ। इस सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुये आप गिरफ्तार हुये। ब्रिटिश सरकार से अपने कृत्य पर क्षमा नहीं माँगने के कारण आप पर भारी जुर्माना लगाया था तथा एक वर्ष का कठोर कारावास दिया । जुर्माना नहीं पटाने पर आपकी बहुत सी सम्पत्ति और ग्रंथालय को नीलाम कर दिया गया । तामस्कर जी शासन के इस अत्याचार के आगे नहीं झुके बल्कि जेल से छूटते ही पुनः आंदोलन में कूद पड़े। शराबबंदी आंदोलन में भाग लेते हुए दोबारा 9 माह के लिये जेल गये । साथ ही सरकार ने उनसे वकालत करने का अधिकार छीन लिया। ब्रिटिश शासन की यह नीति देशभक्तों को कुचलने की थी, किन्तु जनता ने ऐसे देशभक्तों को अपने सर आँखों पर बैठाया था ।

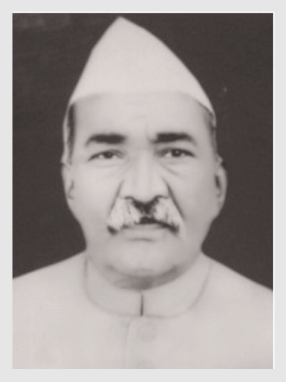

तामस्कर जी 1930 से 1933 तक बेमेतरा कौंसिल के चेयरमेन चुन लिये गये । 1933 में दुर्ग डिस्ट्रिक कौंसिल के सदस्य तथा 1937 से 1940 तक उसके चेयरमेन के पद को सुशोभित किया। 1937 में प्रांतीय सरकार बनाने के लिये हुये चुनाव में आप बेमेतरा क्षेत्र से मध्यप्रान्त के धारासभा (विधानसभा) के प्रतिनिधि निर्वाचित हुये। 1939 में द्वितीय महायुद्ध के काल में विरोध स्वरूप सभी कांग्रेसी सदस्यों की तरह विधानसभा की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया तथा गांधी जी द्वारा संचालित 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रही के रूप में भाग लिया। स्वतंत्रता संग्राम के काल में आपने कुल मिलाकर लगभग पांच वर्षों की जेल यात्रा की थी । इसी बीच समाज सुधार के कार्यक्रम में भी आपने सक्रिय भागीदारी निभायी और अछूतोद्धार कार्यक्रम से जुड़े रहे।

1952 के पहले आम चुनाव में स्वंतंत्र उम्मीदवार के रूप में बेमेतरा क्षेत्र से चुनाव लड़कर विजयी हुये तो 1957 में दुर्ग शहर से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य बने । म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के प्रयत्नों से आपने 1967 का चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया तथा विजयी होकर संसद में प्रवेश किया । आप छत्तीसगढ़ की जनता और किसानों की आवाज देश की संसद में पहुचाते रहे। शायद छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण और बहुत पहले हो जाता किन्तु नियति ने इस कर्मठ माटीपुत्र को 2 सितम्बर 1969 को हमारे बीच से उठा लिया । छत्तीसगढ़ की माटी सदा ऐसी जुझारू संतानों के प्रति ऋणी रहेगी । ऐसे कर्मठ एवं माटीपुत्र देशभक्त के नाम पर हमारे महाविद्यालय का छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नामकरण किये जाने पर समूचा महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित महसूस करता है ।

प्राचार्य की कलम से

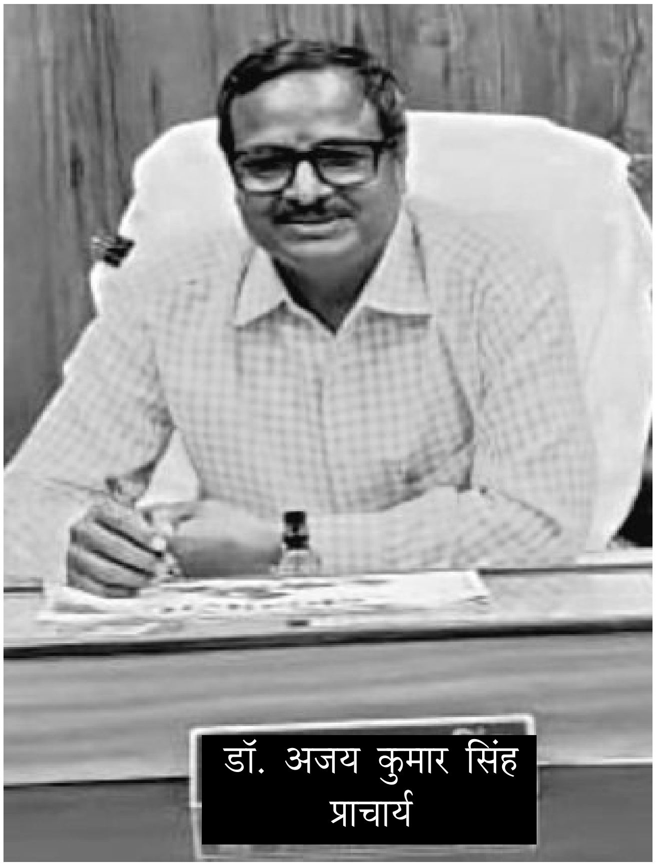

डॉ. अजय कुमार सिंह
प्राचार्य

'कोई भी समाज अपनी संस्कृति, इतिहास और ज्ञान के माध्यम से ही सशक्त बनता है।'

सन् 1958 से निरंतर प्रगति पथ पर आरूढ़ शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग, अपनी गौरवशाली ऐतिहासिक यात्रा के आज 69 वें सोपान पर महाविद्यालय की आत्मा अपने यशस्वी विद्यार्थियों को सम्मानित करने जा रहा है। छत्तीसगढ़ की पावन धारा शिवनाथ के गोद में अवस्थित यह संस्थान संस्कृति-ज्ञान एवं विज्ञान का ऐसा संगम है जिसने समाज, प्रदेश और देश को समृद्ध बनाने वाले सुयोग्य विभूतियों को सतत् पल्लवित-पुष्पित किया, और मेरा दृढ़ विश्वास है कि आगे भी करता रहेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निहित भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार भारतीय युवा मानस को तैयार करने हेतु महाविद्यालय प्रतिबद्ध है। इस क्रम में महाविद्यालय ने निर्धारित पाठ्यक्रम के अतिरिक्त आठ भारतीय ज्ञान परंपरा पर केंद्रित सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों का संचालन किया जिसमें 200 से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हुए। ध्यातव्य है कि ये पाठ्यक्रम महाविद्यालय से बाहर के नागरिकों के लिए भी है। इसी कड़ी में भारतीय ज्ञान परंपरा पर केंद्रित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में नई दिल्ली से अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री महेंद्र कपूर जी का मार्गदर्शन, छत्तीसगढ़ के ओजस्वी कैबिनेट मंत्री, उच्च शिक्षा माननीय टंक राम वर्मा जी का सानिध्य तथा देश और प्रदेश के राष्ट्रवादी विद्वानों का प्रबोधन प्राप्त हुआ। महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के साथ ही प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों से 136 प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों को इसका लाभ मिला। इसी क्रम में अभी हाल ही में उच्च शिक्षा विभाग के सौजन्य से हमने भारतीय ज्ञान परंपरा पर केंद्रित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में हमें हमारे आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि यशस्वी कैबिनेट मंत्री जी का भी मूल्यवान उद्बोधन मिला। राष्ट्रीय शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के माननीय अतुल कोठारी जी के मार्गदर्शन के साथ ही उच्च शिक्षा मंत्री माननीय टंक राम वर्मा जी तकनीकी उच्च शिक्षा मंत्री माननीय खुशवंत साहेब जी, आईटीआई भिलाई के निदेशक राजीव प्रकाश जी, गुरु घासी दास केंद्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर के प्रो आलोक चक्रवाल जी NIT सूरत के निदेशक, उच्च शिक्षा आयुक्त डॉ संतोष कुमार देवांगन जी, दुर्ग संभागायुक्त सत्यनारायण राठौर जी, दुर्ग जिलाधीश अभिजीत सिंह जी सरीखे महानुभावों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

आप सबको विदित है कि हमारा प्रदेश इस वर्ष छत्तीसगढ़ राज्य के गौरवशाली 25 वर्षों की यात्रा पूर्ण करने को रजत महोत्सव के रूप में मना रहा है। इसी कड़ी में हमने विद्यार्थियों, भूतपूर्व विद्यार्थियों और क्षेत्र के नागरिकों को जोड़ते हुए विविध सांस्कृतिक

और रचनात्मक गतिविधियों का भव्य आयोजन किया। सेमिनार, पुस्तक मेला, प्रदर्शनी और प्लेसमेंट शिविर के माध्यम से हजारों विद्यार्थी लाभान्वित हुए। छत्तीसगढ़ रजत जयंती के अवसर पर राज्य स्तरीय काव्य पाठ प्रतियोगिता में हमारे महाविद्यालय की छात्रा रोशनी द्विवेदी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। नवा रायपुर में आयोजित राज्योत्सव में उन्हें माननीय मुख्यमंत्री जी के हाथों सम्मानित किया गया । विकसित भारत @2047 पर आयोजित नवाचार में राज्य भर से चयनित विद्यार्थियों में हमारे दो विद्यार्थी भी शामिल रहे। इसी माह में रसायन विज्ञान विभाग द्वारा अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया जा रहा है।

महाविद्यालय ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर की अत्याधुनिक शिक्षा से छत्तीसगढ़ के प्रतिभाशाली युवाओं को संपन्न करने हेतु निरंतर प्रयासरत है। इसी कड़ी में अपनी अकादमिक व्यवस्था को और समृद्ध बनाते हुए महाविद्यालय ने साइकोलॉजी और कंप्यूटर साइंस में पी जी की कक्षाएं प्रारंभ की है।

रुसा 2.0 के अंतर्गत प्रत्येक विभाग ने देश और राज्य के अकादमिक शीर्ष विद्वानों को आमंत्रित कर उनके व्याख्यानों से विद्यार्थियों को अद्यतन ज्ञान से परिचित कराया। सतत् विस्तार गतिविधियों के माध्यम से महाविद्यालय ने क्षेत्र के पोषक शालाओं से जुड़कर गांव गांव में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु समाज को प्रेरित किया।

व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में प्राध्यापकों के साथ विद्यार्थियों ने भी अपनी सक्रिय भूमिका रचते हुए महाविद्यालय में एक नई और अनूठी पहल की शुरुआत की। कला क्लब के मार्गदर्शन में पब्लिक स्पीकिंग सोसाइटी, PSS ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता को संवारने हेतु विभिन्न गतिविधियों की रचना की। वसंत पंचमी पर किया गया सांस्कृतिक आयोजन स्पंदन 2026 उनमें से अग्रणी है। इस आयोजन के माध्यम से ना केवल प्रदेश और देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रस्तुत किया वरन् विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने के क्रम में आत्मविश्वास का सृजन भी किया।

समग्र रूप से, महाविद्यालय ने शैक्षणिक गुणवत्ता, पाठ्यक्रम विकास एवं शोध गतिविधियों के क्षेत्र में निरंतर प्रगति करते हुए क्षेत्र में उच्च शिक्षा के एक प्रमुख केंद्र के रूप में अपनी पहचान को सुदृढ़ किया है एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखा है। स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर महाविद्यालय के परिणाम संतोषजनक से उत्कृष्ट रहे। कई विभागों में उच्च उत्तीर्ण प्रतिशत दर्ज किया गया तथा अनेक विद्यार्थियों ने अपने-अपने पाठ्यक्रमों में विशिष्ट अंक एवं सर्वोच्च स्थान प्राप्त किए है। स्वशासी संस्था होने के कारण महाविद्यालय में सीबीसीएस एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के अनुरूप संशोधित पाठ्यक्रम लागू किया गया है। पाठ्यक्रम में कौशल आधारित, मूल्यवर्धित एवं अंतःविषयक पाठ्यक्रमों को सम्मिलित किया गया, जिससे व्यावहारिक ज्ञान, रोजगारोन्मुखी शिक्षा एवं सर्वांगीण विकास को बढ़ावा मिला। पाठ्यक्रम की गुणवत्ता एवं प्रासंगिकता सुनिश्चित करने हेतु हितधारकों से प्राप्त फीडबैक को सम्मिलित किया गया है।

महाविद्यालय ने शोध एवं प्रकाशन गतिविधियों में भी उल्लेखनीय प्रगति की है। संकाय सदस्यों द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं, जिनमें यूजीसी-केयर सूचीबद्ध जर्नल शामिल हैं, में 72 शोध पत्र प्रकाशित किए गए है, जिनमें से अनेक स्कोपस (Scopus) एवं वेब ऑफ साइंस (Web of Science) में सूचीबद्ध हैं, महाविद्यालय की शोधात्मक साख को सुदृढ़ करते हैं। महाविद्यालय की संस्थागत एच-इंडेक्स (H-Index) शोध उद्धरण प्रभाव को दर्शाता है, जो सक्रिय शोध सहभागिता को प्रतिबिंबित करता है।

पिछले कुछ वर्षों में महाविद्यालय द्वारा कुल 30 पेटेंट प्राप्त किए गए हैं, जो संकाय एवं विद्यार्थियों की सक्रिय अनुसंधान एवं नवाचार क्षमता को दर्शाते हैं। वर्तमान शैक्षणिक सत्र में महाविद्यालय ने 5 नए पेटेंट दर्ज किए, जो विशेषकर प्रयोगात्मक अनुसंधान, तकनीकी नवाचार और व्यावहारिक समाधान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान को प्रदर्शित करते हैं। इन पेटेंटों के माध्यम से महाविद्यालय ने अनुसंधान और नवाचार संस्कृति को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ अपने अकादमिक और तकनीकी प्रोफाइल को सुदृढ़ किया है। विगत शैक्षणिक सत्र में महाविद्यालय में 38 से अधिक सेमिनार, कार्यशालाओं एवं प्रायोगिक (हैंड्स-ऑन) प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिनमें 3,000 से अधिक विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की सक्रिय सहभागिता रही। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य शोध संस्कृति का

विकास एवं शैक्षणिक सहभागिता को प्रोत्साहन देना रहा है।

इसके अतिरिक्त, करियर मार्गदर्शन, NET/SET कोचिंग तथा प्रतियोगी परीक्षा तैयारी से संबंधित सत्रों का आयोजन किया गया, जिनसे 1,200 से अधिक विद्यार्थियों को लाभ प्राप्त हुआ है।

महाविद्यालय में पुस्तकालय का विकास निरंतर किया जा रहा है, जिसमें विद्यार्थियों और संकाय सदस्यों के लिए नवीनतम पुस्तकें, ई-रिसोर्सेज और डिजिटल सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। इसके साथ ही कंप्यूटर लैब को उन्नत उपकरणों और नवीनतम सॉफ़्टवेयर से सुसज्जित किया गया, ताकि छात्रों को प्रायोगिक और डिजिटल कौशल प्राप्त हो।

संकाय सदस्यों के विकास और कौशल संवर्धन हेतु विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें MOOCs (Massive Open Online Courses) और AI आधारित शिक्षण विधियों पर प्रशिक्षण दिया गया, जिससे संकाय डिजिटल शिक्षण और आधुनिक तकनीकी विधियों के प्रयोग में सक्षम हो सकें।

इन प्रयासों से महाविद्यालय में शैक्षणिक गुणवत्ता, अनुसंधान क्षमता और डिजिटल दक्षता में निरंतर सुधार हुआ है।

महाविद्यालय के कार्यालय स्टाफ और प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें कार्यालय संचालन, अभिलेख प्रबंधन और अच्छे प्रयोगशाला अभ्यास (Good Laboratory Practices) पर विशेष ध्यान दिया गया।

महाविद्यालय में विभागीय स्मृति दिवस (commemorative days)और विशेष अवसरों का आयोजन छात्रों और संकाय सदस्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ किया गया। हाउस गतिविधियाँ एवं विज्ञान, कला और वाणिज्य क्लब के कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों में नेतृत्व कौशल और टीम भावना का विकास किया गया। इसके अतिरिक्त, एक्सटेंशन गतिविधियाँ और सामुदायिक सेवा कार्यक्रम आयोजित कर स्थानीय समाज में सहभागिता और सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा दिया गया। महाविद्यालय द्वारा निशुल्क एवं सशुल्क परामर्श सेवाएँ (Consultancy Services) प्रदान की गई, साथ ही एमओयू (MOU) के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों का संचालन कर अकादमिक और शोध सहयोग को सुदृढ़ किया गया। संकाय सदस्य विभिन्न कार्यशालाओं, सेमिनारों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संसाधन व्यक्ति (Resource Persons) के रूप में योगदान देते रहे है। साथ ही, महाविद्यालय ने भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय कार्यक्रमों का आयोजन कर सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की है।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों को स्कूल शिक्षण और महाविद्यालय शिक्षण के साथ-साथ उच्च शिक्षा के अवसर प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त, राज्य लोक सेवा आयोग (PSC) में भी विद्यार्थियों का सफल चयन हुआ है। महाविद्यालय में आयोजित कैंपस प्लेसमेंट कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों को वेदांता समूह, राष्ट्रीयकृत बैंक और विभिन्न कॉर्पोरेट सेवाओं में नियुक्ति का अवसर मिला है। इन प्रयासों के द्वारा विद्यार्थियों को व्यावसायिक कौशल, करियर मार्गदर्शन और रोजगारोन्मुखी अनुभव प्रदान किया गया है।

आगामी वर्षों में महाविद्यालय नई पाठ्यक्रम पहल, डिजिटल शिक्षा, उद्यमिता विकास और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करेगा। छात्रों के व्यावहारिक प्रशिक्षण, करियर मार्गदर्शन, स्टार्टअप प्रोत्साहन और शोध परियोजनाओं को और सशक्त किया जाएगा। इसी क्रम में महाविद्यालय द्वारा इस सत्र में विद्या वाणी ऑडियो विडियो कक्ष का निर्माण किया गया है. महाविद्यालय के दक्ष प्राध्यापकों द्वारा विषय से संबंधित पाठ्यक्रम कि रिकार्डिंग कि जाएगी तथा अपने महाविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ ही प्रदेश एवं देश विदेश के विद्यार्थियों हेतु महाविद्यालय कि वेबसाइट पर रिकॉर्डिंग को उपलब्ध कराया जायेगा.

महाविद्यालय को NAAC (राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद) द्वारा 'A+' ग्रेड प्राप्त है। आगामी सत्रों में महाविद्यालय सतत गुणवत्ता सुधार, अंतर-विषयक पाठ्यक्रम विकास, शोध एवं नवाचार गतिविधियों का विस्तार कर अपनी अकादमिक और अनुसंधान उत्कृष्टता को और मजबूत बनाएगा।

व्यंजना पत्रिका के संपादक, संपादन काम में सहयोग देने वाले प्राध्यापक गण, अपनी रचनात्मक प्रतिभा से इस पत्रिका को समृद्ध करने वाले प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों को साधुवाद। व्यंजना का यह 'रजत जयन्ती' केन्द्रित विशेषांक अन्य विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता को प्रेरित करेगा।

---000---

संपादकीय

समय के शिलालेखों पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले छत्तीसगढ़ का इतिहास सदियों पुराना है। दक्षिण कोशल, महाकांतर, दंडकारण्य एवं चेदिसगढ़ आदि नामों से अभिहित यह क्षेत्र रत्न गर्भा है । 36 गढ़ों/किलों के कारण छत्तीसगढ़ नाम से ख्यात यह क्षेत्र 19वीं सदी में ब्रिटिश शासन के तहत एक कमिश्नरी बना एवं आज़ादी के पश्चात मध्य प्रदेश का हिस्सा।

अलग राज्य की माँग हेतु 1970 के दशक में शुरु हुआ आंदोलन सन् 2000 में फलीभूत हुआ जब संसद द्वारा पारित विधेयक से 1नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ देश का 26वाँ राज्य बना। धान का कटोरा' कहे जाने वाला छत्तीसगढ़, आज अपने 25 वर्ष पूरे होने का उत्सव मना रहा है। 'मोर संग चलव रे' की तान को अपनी पहचान बनाने वाले इस राज्य ने सबको साथ लेकर कठिन चुनौतियों के बावजूद इन ढाई दशकों में विकास का एक अनूठा सफर तय कर लिया है । इस अवधि में राज्य ने अपनी सांस्कृतिक पहचान, प्राकृतिक संपदा और विशिष्ट विरासत को बरकरार रखते हुए, कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हासिल की है। राज्य गठन के बाद से ही, छत्तीसगढ़ में राजनीतिक स्थिरता ने विकास को पंख दिए हैं। सुदृढ़ प्रशासन ने शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढाँचे में सुधार के लिए कई योजनाएँ शुरू की जिससे ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में जीवन स्तर में सुधार हुआ।

छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि एवं औद्योगिकीकरण है। पिछले 25 वर्षों में इसने इन क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की। सरकार की किसान हितैशी नीतियों जैसे कि न्यूनतम समर्थन मूल्य या धान की खरीदी, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार ने जहाँ किसानों की आय बढ़ाई व स्टील, कोयला, सीमेंट और बिजली उत्पादन के क्षेत्र में औद्योगिकीकरण ने भी गति पकड़ी।

अलग राज्य बनने के बाद से ही शिक्षा के क्षेत्र में, छत्तीसगढ़ ने अभूतपूर्व प्रगति हासिल की। ना केवल राज्य के दुर्गम इलाकों में शिक्षा की ज्योति जलाई गई अपितु उत्कृष्ट शैक्षिक संस्थानों की स्थापना कर राज्य के नौनिहालों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराने का अवसर भी दिया। राज्य ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुपालन में आमूल चूल परिवर्तन भी किया। ज्ञानोदय योजना के अंतर्गत सरकारी विद्यालयों को स्मार्ट कक्षाओं और कंप्यूटर प्रयोगशालाओं से सम्पन्न किया। पी. एम. श्री विद्यालय और अटल टिंकरिंग लैब के माध्यम से डिजिटल शिक्षा और नवाचारों को बल मिला। आई, आई, एम, एम्स, एच एन एल यू, रायपुर, आईआईटी भिलाई, एन आई टी, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जैसे राष्ट्रीय संस्थायों की स्थापनाओं से उर्जा और आत्मविश्वास का नवीन संचार हुआ। विभिन्न शैक्षणिक संस्थाएं अपनी पारंपरिक ज्ञान परपरा को सुदृढ़ करने के साथ ही आधुनिक तकनीकों जैसे ए आई, रोबोटिक्स, डेटा साइंस, फारेंसिक आदि विषयों में उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करा रही हैं। नवा रायपुर में देश का पहला AI डेटा पार्क बन रहा है।

आधारभूत संरचना के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ ने अतुलनीय विकास किया है। सड़क, रेल, वायुयान के क्षेत्र में राज्य निर्माण के साथ ही उत्तरोत्तर प्रगति हुई है।

खेलों में छत्तीसगढ़ के युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक खेल अकादमियों की स्थापना की गई - जशपुर में हॉकी, बीजापुर में तीरंदाजी, नारायणपुर में मलखम्भ अकादमी । समग्र विकास के लिए छत्तीसगढ़ खेल विकास प्राधिकरण का गठन किया

गया। बस्तर ओलंपिक की शुरुआत की गई। इन प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि भारोत्तोलन प्रतिस्पर्धा में ज्ञानेश्वरी यादव, विजय कुमार, बैडमिंटन में आरुषि कश्यप जैसे खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ का मान बढ़ाया।

अरपा पैरी, महानदी, खारुन, इंद्रावती, शिवनाथ जैसी नदियों से अभिसिंचित यह क्षेत्र अपनी वन संपदा के लिए एक विशिष्ट पहचान रखता है। - इन पचीस वर्षों में इस नवीन राज्य ने अनेक चुनौतियों का सामना भी किया। निम्न साक्षरता दर, नक्सल वाद से पीडित वनक्षेत्र एवं प्रतिव्यक्ति निम्न आय की संकट के साये में ही छत्तीसगढ़ राज्य का उद्‌भव हुआ।

राजनीतिक स्थिरता एवं प्रशासनिक दक्षता तथा जनता के पूर्ण सहयोग से राज्य ने अपने संसाधनों के समुचित उपयोग एवं केंद्र की सहायता से आसन्न संकटों का सफलतापूर्वक सामना किया। विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक कल्याण की योजनाओं के कारण स्त्रियों के जीवन में उल्लेखनीय विकास हुआ। आज नक्सल समस्या से राज्य अंतिम लड़ाई लड़ रहा है। कोविड रूपी महामारी का सामना भी बड़ी दक्षता से किया गया। वह सपना दूर नहीं जब 'सबले बढ़िया छत्तीसगढ़िया' के साथ ही 'सबले विकसित छत्तीसगढ़िया' की अनुगूंज से संवलित सतत एवं टिकाऊ विकास की पहचान बनता छत्तीसगढ़ देश ही नहीं विश्व का भी रोल मॉडल बनेगा। छत्तीसगढ़ की इसी गौरवमयी यात्रा के विविध पक्षों को रेखांकित करने के लिए प्राचार्य डॉ अजय कुमार सिंह की प्रेरणा से महाविद्यालयीन पत्रिका 'व्यंजना' का रजत जयंती विशेषांक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। हिंदी, छत्तीसगढ़ी एवं अंग्रेजी भाषाओं में सृजनात्मक लेखों, कविताओं और महत्वपूर्ण आयोजनों से समृद्ध यह अंक विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों की रचनात्मकता को पल्लवित करने में सहायक होगा।

व्यंजना के इस अंक को संभव बनाने में डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव, डॉ. अनुपमा कश्यप, डॉ. तरलोचन कौर, डॉ. ज्योति धारकर, डॉ. निगार अहमद, डॉ. लाली शर्मा, डॉ. शारदा सिंह, डॉ. ओम कुमारी, डॉ. रजनीश उमरे सहित रचनाकार प्राध्यापक एवं विद्यार्थियों के अमूल्य योगदान हेतु आभार। साथ ही ढाल सिंह एवं विकल्प विमर्श के जीवेश प्रभाकर एवं उनकी टीम तथा पी आर ओ रायपुर का भी धन्यवाद जिनका सहयोग व्यंजना को मिला। अंत में लोक कवि पवन दीवान के शब्दों में यह अंक हम छत्तीसगढ़ महतारी को समर्पित करते हैं -

तोर धरती, तोर माटी रे भइया, तोर धरती, तोर माटी।
धरती बर तो सबो बरोबर, का हाथी, का चांटी रे भइया,
तोर धरती, तोर माटी।

डॉ. अंबरीष त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)

सच्चा लेखक जितनी बड़ी जिम्मेदारी अपने सर ले लेता है, स्वयं को उतना तुच्छ महसूस करता है ।

- मुक्तिबोध

छत्तीसगढ़ रजत जयंती

अक्षत श्रीवास्तव
बी.एस-सी. 6वां सेमेस्टर

जब एक राज्य अपनी 25 (पच्चीस) साल की यात्रा को रजत जयंती के रूप में मनाता है, तो वह केवल अतीत का उत्सव नहीं होता - यह भविष्य के लिए एक प्रतिबद्धता भी होता है। छत्तीसगढ़ रजत जयंती महोत्सव इसी प्रतिबद्धता का प्रतीक हैः यह राज्य की सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक-सांस्कृतिक उपलब्धियाँ और विकास की दिशा को एक साथ प्रस्तुत करने का अवसर है। महोत्सव का मूल मंत्र ज्ञान **(GYAN) G -** गरीब, **Y-** युवा, **A -** अन्नदाता, **N-** नारी - न केवल सामाजिक प्राथमिकताओं को रेखांकित करता है, बल्कि यह बताता है कि समावेशी विकास और सांस्कृतिक संरक्षण कैसे एक - दूसरे को सशक्त करते हैं।

यह प्रस्तावना महोत्सव के उद्देश्य और स्वरूप को स्थापित करती है और आगे के हिस्से में महोत्सव के आयोजन, प्रतीकत्मक अनावरण और जनजागरण गतिविधियों के माध्यम से इन लक्ष्यों की व्यावहारिक अभिव्यक्ति का विश्लेषण प्रस्तुत करेगी ।

उद्देश्य, स्वरूप और साक्ष्य

छत्तीसगढ़ रजत जयंती महोत्सव का केंद्रीय उद्देश्य राज्य की 25 वर्षों की यात्रा को सम्मानित करना और नागरिकों को 2050 के लिए साझा दृष्टि के निर्माण में जोड़ना है । यह महोत्सव केवल समारोहों का संग्रह नहीं, बल्कि नीतिगत संदेशों और सांस्कृतिक पुनः प्राप्ति का मंच है।

मूल मंत्र (ज्ञान)

G - गरीब, **Y -** युवा- **A -** अन्नदाता, **N -** नारी महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि यह विकास के चार स्तम्भों को एक सरल, यादगार रूप में प्रस्तुत करता है और नीति निर्माताओं तथा जनता के बीच संवाद का आधार बनता है। उदाहरण के तौर पर, महोत्सव में आयोजित पैनल चर्चाओं और सार्वजनिक विमोचन कार्यक्रमों में गरीबी उन्मूलन योजनाओं, युवा कौशल परियोजनाओं और महिला सशक्तिकरण पहलों की प्रगति को उजागर किया गया, जिससे नीतिगत उपलब्धियों का स्पष्ट प्रमाण मिलता है।

पुस्तक का विमोचन

इस महोत्सव का एक ठोस कदम है। जैसे **मेरा छत्तीसगढ़ः** यह पुस्तक न केवल परियोजनाओं और नीतियों का संकलन होगा, बल्कि भविष्य के लक्ष्यों के लिए रोडमैप भी प्रस्तुत करेगा । पुस्तक में कृषि सुधारों, ग्रामीण बुनियादी ढांचे, शिक्षा और स्वास्थ्य के आँकड़ों का संक्षेप शामिल होने से नागरिकों को उपलब्धियों का स्पष्ट चित्र मिलेगा और स्थानीय स्तर पर प्रेरणा पैदा होगी ।

ऐतिहासिक प्रतीकों का अनावरण और लोक कला प्रदर्शन - पंथी, राउत नाचा , करमा - महोत्सव को सांस्कृतिक गहराई देते हैं। जब स्थानीय कलाकारों को मंच मिलता है और आदिवासी समुदायों की कहानियाँ सार्वजनिक रूप से साझा होती हैं, उदाहरण के लिए, जब किसी जिले के राउत नाचा कलाकार मंच पर अपनी परंपरा बताते हैं और उसी कार्यक्रम में युवा कलाकारों को प्रशिक्षण मिलता है, तो सांस्कृतिक संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक अवसर भी बनते हैं- स्थानीय हस्तशिल्प और पर्यटन को बढ़ावा मिलता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम जनभागीरदारी बढ़ाते हैं, जबकि विकास-प्रशासन और सार्वजनिक विमर्श नागरिकों को नीति निर्माण में सक्रिय भागीदार बनाते हैं । इस संयोजन से महोत्सव केवल स्मरणोत्सव नहीं रहकर एक क्रियाशील मंच बन जाता है। जो छत्तीसगढ़ को 2050 की दिशा में प्रेरित करता है।

अंततः महोत्सव का स्वरूप इस बात का प्रमाण है कि सांस्कृतिक उत्सव और विकास संवाद एक दूसरे के पूरक है :- सांस्कृतिक कार्यक्रम जनभागीदारी बढ़ाते हैं, जबकि नीति प्रकाशन और सार्वजनिक विमर्श नागरिकों को भविष्य की योजनाओं में सक्रिय भागीदार बनाते हैं ।

वनो की गहराई में गूंजे स्वर,
छत्तीसगढ़ का यहाँ अनुपम नगर,
नदियों की धारा, जनजाति की गान,
संस्कृति में बसता है इसका मान ।

‘छत्तीसगढ़ विकास यात्रा के 25 साल’

डॉ. के. पद्मावती
प्राध्यापक

छत्तीसगढ़ का 25 सालों में आर्थिक विकास

छत्तीसगढ़ राज्य भारत का महत्वपूर्ण राज्य, अपनी प्राकृतिक सुन्दरता, सांस्कृतिक धरोहर और समृद्ध संसाधनों के लिए प्रसिद्ध है।

आज से 22 वर्ष बाद यानी 2047 में हमारा भारत अपनी स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ मनाएगा उसमें हमारे छत्तीसगढ़ जो अपनी 25वीं वर्षगांठ मना रहा है, की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

छत्तीसगढ़ के 2047 तक प्राप्त किए जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्य है -

* GDP को 2030 तक 5 लाख करोड़ से 11 लाख करोड़ करना तथा 2047 तक 75 लाख करोड़ करना यानी 15 गुना करना।
* प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाकर 17 लाख से 20 लाख के लगभग करना।
* **विभिन्न क्षेत्रों के योगदान**

	2024	2030	2035	2047
प्राथमिक	20	16	16	15
द्वितीयक	45	45	42	55
सेवा	35	39	42	50

* अब छत्तीसगढ़ अपनी स्थापना 25 वर्ष पूर्ण कर रहा है।
* राज्य की स्थापना इस उद्देश्य के साथ की गई थी कि छोटे राज्य का विकास तीव्र गति से होता है।
* हमारा देश भारत 15 अगस्त 2047 को अपनी स्थापना के 100 वर्ष विकसित राष्ट्र होने की सम्भावना के साथ पूर्ण कर रहा है।
* भारत के साथ साथ सभी राज्यों ने अपने विजन - 2047 दस्तावेज या तो तैयार कर लिए है या तैयार करने की प्रक्रिया में है।
* छत्तीसगढ़ ने भी अपना विजय डाक्यूमेंट तैयार कर लिया है जिसका शीर्षक है - छत्तीसगढ़ अंजोर विजन @2047 और इसे 17 जुलाई 2025 को हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा जारी किया गया।
* सरकार द्वारा अल्पविधि (2030 तक) मध्यम अवधि (2025 तक) और दीर्घविधि के लक्ष्य निर्धारित किए गए है।

‘‘जंगलों की हरियाली, खेतों का सोना
विकास की राह पर, छत्तीसगढ़ का नूतन कोना’’

छत्तीसगढ़ राज्य भारत का एक महत्वपूर्ण राज्य है जो अपनी प्राकृतिक सुन्दरता, सांस्कृतिक धरोहर और समृद्ध संसाधनों के लिए प्रसिद्ध है।

* छोटे राज्यों की स्थापना इस उद्देश्य के साथ की जाती है कि छोटे राज्यों का विकास तीव्र गति से होता है। उस समय भी

नक्सलवाद एक बड़ी समस्या के रूप हमारे साथ था। विकास कार्य हेतु जो राशि है वो अपने लोगों से वैचारिक मतभेद पर खर्च हो जा रही है जिसके लिए वर्तमान मे हमारी सरकार ने तेलंगाना राज्य के साथ मिलकर "Black Forest" नामक एक Focused Operation 21 अप्रैल 2025 से प्रारंभ किया है उसका लक्ष्य है 31 मार्च 2026 तक हमारा राज्य इस समस्या से मुक्त हो सके।

सामाजिक क्षेत्र के लिए लक्ष्य

1. जीवन प्रत्याशा (औसत जीवन काल) - स्वास्थ्य, जीवन शैली, आहार आर्थिक स्थिति।
2. मातृ मृत्युदर MMR (MMR) - 1 लाख महिलाओं में 137 महिलाओं को प्रसव के दौरान मृत्यु हो जाती है उसे 10 करना है।
3. बाल मृत्युदर IMR - (0-1) वर्ष के 1 हजार बच्चों मं 38 की मृत्यु हो जाती है जिसे 5 करना है।
4. साक्षरता - 78.2 से 99.9% करना।
5. बेरोजगारी का दर -2.7 से 1% करना।
6. अंक्षय उर्जा योगदान -16 से 66% तक बढ़ाना।

कृषि क्षेत्र के लक्ष्य -

GVA कृषिक्षेत्र के सकल मूल्य वर्धित किसी अर्थव्यवस्था में किसी उद्योग क्षेत्र, निर्माता या देश द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य है, जिसमें उत्पादन की लात में शामिल मध्यवर्ती वस्तुओं और सेवाओं की लागतों को घटा दिया जाता है। यह आर्थिक गतिविधियों के योगदान को भापता है।

GVA = सकल उत्पादन का मूल्य - मध्यवर्ती उपभोग का मूल्य (किसी अंतिम उत्पाद के निर्माण में कच्चामाल के रूप में दिया।

* कृषि क्षेत्र के GVA - 1 लाख करोड़ से 11 लाख करोड़।
* प्रतिव्यक्ति कृषि आय - 0.5 लाख से 7 लाख (14 गुना)
* सिंचाई 38 से 55% गुना बढ़ाना।
* खाद्यान उत्पादकता को 25% बढ़ाना 2047 तक
* गैर कृषि क्षेत्र के योगदान को 50% तक बढ़ाना
* मछलीपालन कुक्कुट (अर्थात् 5.5 लाख)
* आर्गेनिक फार्मिंग से 30% बढ़ाना।
* मशीनों के उपयोग को 75% तक बढ़ाना ताकि उत्पादकता में बढ़ाया जा सके।

औद्योगिक क्षेत्र के लक्ष्य -

* GVA 25-28 लाख करोड़ तक करना वर्तमान में 2.5 लाख गोड़ है

तमिलनाडू - 31 लाख गोड़

गुजरात में - 30 लाख गोड़

* MSMS की संख्या 9 लाख से 24 लाख करना तभी GVA कहेगा।
* सेस्टोव के विकास अवस्था - 3-4 के बीच है। 2047 तक विकसित हो जाना है।

* **स्वस्थ्य व खुशहाल छत्तीसगढ़**

स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, स्वास्थ्य शिविर आयुष्मान कार्ड, भारत खुशहाली - आर्थिक विकास, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा मनोरंजन और सांस्कृतिक गतिविधियाँ -

* कृषि संवर्धन मिशन
* छत्तीसगढ़ विनिर्माण मिशन
* राज्य ई-मिशन
* गुणवत्ता मिशन - स्वयं पोर्टल
* वन सम्पदा मिशन
* राज्य अधोरंचना मिशन - सड़के
* हरित छत्तीसगढ़ मिशन
* सुशासन मिशन

जनभागीदारी से ही यह संभव हो सकेगा लोगों को मिशन में भाग लेने और अपने विचारों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

25 वर्ष की विकास यात्रा

NSDP (Net State Domestic Product) शुल राज्य घरेलू उत्पाद (स्थिर मूल्यों पर) चक्रवृद्धि CAGR वार्षिक दर Compound Annual Growth Rate CAGR 7.53

प्रतिव्यक्ति आय - 5.83

क्षेत्रवार GSDP में योगदान (Gross State Domestic Product)

	2011.12	2023.24
Primary	18%	15.32
Secoundary	47.27	53.50
सेवा क्षेत्र	34.63	31.19

कृषि विकास - सिंथिल क्षेत्र

1999 - 200 - 13.28 लाख हेक्टेयर

मार्च 2024 - 31.76 लाख हेक्टेयर

वृद्धि - 39.27%

Land use (भूमि का उपयोग)

	2001-02	2023-24
Area	136.3 लाख हे.	136.03 लाख हे.

वन क्षेत्र

शुह तुआई क्षेत्र

वन क्षेत्र को बढ़ाना है -

खनिज का भंडार, प्रकृति का वरदान, विकास से हो उज्जवल यह प्रदेश महान-

भारत में कुल खनिज उत्पादन में हमारा योगदान

कृषि उत्पादन - खाद्यान - में ज्यादा ध्यान रहा

कृषि उत्पादकता 2013-14 के देश में खनिज उत्पादकता बढ़ी है। में योगदान 8-7 जा अब 14.42% है।

Banking -1999-1045 था यानी 2024 में 3412 शाखाएं हो गई है ।

(Credit Deposit) Ratio CD का अर्थ है बैंक अपनी जमा राशि का कितना प्रतिशत कर्ज के रूप में देते है। 71.54 का अर्थ है कि बैंक एक बडा हिस्स लोन देने को तैयार है। डैडम् का फायदा होगा।

सेवा क्षेत्र -

	2001	2011	2023
साक्षरता दर	65.18	70.28	78.5
मातृ मृत्युदर MMR	365	137 (2018)	
शिशु मृत्युदर MR	79	38	27 ;2021द्ध
गरीबी	49.4	39.9	11.71
मानव विकास सूचकांक	2000 - .555		
	2024 - 0.679 (35 राज्यों में 30 नंबर पर है)		

पैरामीटर

स्वास्थ्य शिक्षा जीवन स्तर

जीवन प्रत्याशा+ (Gross Rational Income) शुद्ध सकल राष्ट्रीय आय

* 2/3 (15-64) कार्यरत जनसंख्या (1/3 बच्चे या बुजुर्ग)

* जनसंख्या बढ़ा है - 3.01 करोड़ से 9.7 करोड़

* बारिश अच्छी होती है।

* Medicinal Plant संदज अच्छे है।

* 80%: वन उत्पाद (लकड़ी को छोड़कर) बांस, तेंदूपत्ता, शहद आदि हरबल पत्रे

* खनिज सम्पदा है - भिलाई, कोरबा

* Highways विकास (आधारभूत संरचना)

* (1/6) (160%) faeight (मालगाड़ी वाहन) (बिलासपुर डिविजन सबसे ज्यादा कमा कर देता है)

* विद्युत उत्पादन नं. 1 है। तेलंगाना, आंध्रपदेश ग्राहक है।

Quarter - Century of Growth : Chhattisgarh's Journey."

छत्तीसगढ़ की विशिष्टताएँ

राजा पटेल

एमए 4 सेमेस्टर (हिन्दी)

(1) विश्व प्रसिद्ध बस्तर दशहरा - 75 दिन

(2) जनजातीय युवागृह - घोटूल, धूमकुरिया आदि (अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखती है।)
वेरियर एल्विन द्वारा प्रकाशित पुस्तक (The muri a and Their Ghotul -1947)

(3) पर्यटन में 60 देशों में चयनित 20 ग्रामों में से छ.ग. के बस्तर अंचल से घुड़मारास गांव का चयन

(4) देश का प्रथम डिजिटल जनजातीय संग्रहालय - रायपुर

(5) भारत का प्रथम बालविवाह मुक्त जिला - बालोद

(6) (छ.ग.) का प्रथम रामसर स्थल - कोपरा जलाशय (बिलासपुर जिला)

(7) यूनेस्की की अन्तरष्ट्रीय धरोहर की अस्थाई सूची में शामिल - कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान

(8) नवा रायपुर में कलाग्राम स्थापना उद्देश्य - छ.ग. की कला संस्कृति और शिल्प को बढ़ावा देना ।

(9) बस्तर पण्डुम का आयोजन - गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में स्थान प्राप्त।

(10) देश में धान की सर्वाधिक किस्मों वाला राज्य- छत्तीगढ़

(11) विश्व प्रसिद्ध जनजातीय नृत्य - गौर नृत्य

(12) राज्य का पहला एआई डाटा सेंटर - नवा रायपुर में

(13) ईसाई धर्म का प्रसिद्ध मेला - मदकू द्वीप (मूंगेली)

(14) कूटूमसर गुफा को भारत का कार्ल्सवार ऑफ केव कहा जाता है। (विश्व की लम्बी भूमिगत गुफा की कार्ल्सवार ऑफ केव अमेरिका से तुलना)

(15) एशिया का सबसे बड़ा इस्पात संयंत्र - भिलाई स्टील प्लांट

(16) कोसा बुनाई के लिए प्रसिद्ध - चांपा

(17) विश्व प्रसिद्ध मंडई - नारायणपुर

(18) विश्व का सर्वाधिक प्राचीन शिल्पकाल - बस्तर का डोकरा शिल्पकला

(19) छ.ग. में गर्म जल का स्त्रोत - ताता पानी (बलरामपुर)

(20) छ.ग. की भूंजिया जनजाति में शादी में हल्दी रस्म में सामान्यतः सफेद साड़ी पहनने की परम्परा है।

(21) छ.ग. के 36 भाजी प्रसिद्ध है।

(22) टिन उत्पादन में प्रथम एवं कोयला एवं लौह अयस्क उत्पादन में द्वितीय स्थान रखता है।

(23) छ.ग. का काशी/वाराणसी - खरौद (जांजगीर चांपा)

(24) छ.ग. का चित्तौड़ - लाफागढ़ (कोरबा)

(25)	छ.ग. का प्रयाग	- राजिम
(26)	छ.ग. की ऊर्जानगरी	- कोरबा
(27)	टमाटर की राजधानी	- लुडेंग (जशपुर)
(28)	छ.ग. के शैलाश्रयो का गढ़	- रायगढ़
(29)	छ.ग. का शिमला	- मैनपाट
(30)	छ.ग. का नागलोक	- तपकरा (जशपुर)
(31)	छ.ग. का स्वीट्जरलैण्ड	- झन्ना (जशपुर)
(32)	छ.ग. का चेरापुंजी	- अबुझमाड़ (नारायणपुर)
(33)	छ.ग. का ज्ञान राजधानी	- भिलाई (दुर्ग)
(34)	छ.ग. का मॉरीशस	- बुका (कोरबा)
(35)	छ.ग. का पेरिस	- राजनांदगांव
(36)	छ.ग. का भीम बेटका	- सिंघनपुर की गुफा
(37)	छ.ग. में प्राकृतिक शिवलिंग	- मधेश्वर पहाड़ (जशपुर)
(38)	छ.ग. में पत्रकारिता के जनक	- माधवराव सप्रे
(39)	छ.ग. का मंगलपांडे	- हनुमान सिंह
(40)	छ.ग. का तात्या टोपे	- गुण्डाधूर
(41)	छ.ग. का भगत सिंह	- परसराम सोनी
(42)	छ.ग. का गांधी	- सुन्दरलाल शर्मा
(43)	छ.ग. का वाल्मीकि	- गोपाल मिश्रा
(44)	छ.ग.का पाणिनि	- हीरालाल काव्योपाध्याय
(45)	बस्तार का गांधी	- मनकू राम सोढ़ी
(46)	छ.ग. में तालाबों की नगरी	- रतनपुर (बिलासपुर)
(47)	छ.ग. में मंदिरों की नगरी	- आरंग (रायपुर)

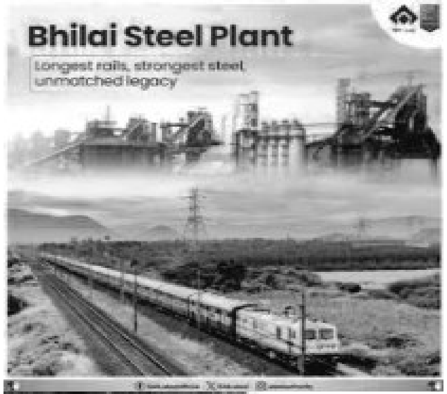

छत्तीसगढ़ी जन जीवन के कुशल चितेरे : गिरीश पंकज

डॉ. लता गोस्वामी अतिथि व्याख्याता हिंदी विभाग

छत्तीसगढ़ के शीर्षस्थ व्यंग्यकारों में एक नाम गिरीश पंकज का है, वे यथार्थवादी लेखक हैं । छत्तीसगढ़ में व्यंग्य की जड़ें यहाँ की लोक संस्कृति और बोलियों में समाहित हैं । गिरीश पंकज ने अपनी रचनाओं में छत्तीसगढ़ की संस्कृति, लोक जीवन, परिवेश, पर्व- त्यौहार, बस्तर का विश्व प्रसिद्ध दशहरा तथा यहाँ के आर्थिक, राजनीतिक, समाजिक परिस्थितियों का उल्लेख किया है । समाज की वास्तविक स्थितियों को उन्होंने निकट से देखा, परखा और उन्हीं अनुभवों को व्यंग्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। उनका व्यंग्य समाज का आईना है, जिनमें व्यक्ति और व्यवस्था दोनों के चेहरे स्पष्ट दिखाई देते हैं। वे सामाजिक विसंगतियों पर केवल कटाक्ष नहीं करते, बल्कि समाधान की ओर संकेत भी करते हैं। व्यंग्य के माध्यम से वे समाज सुधार पर जोर देते हैं ।

हिंदी व्यंग्य परंपरा में गिरीश पंकज एक ऐसा नाम है, जिसने व्यंग्य को केवल हँसी-मज़ाक या चुटकुलों की विधा मानकर उसे सामाजिक विवेक और नैतिक चेतना का माध्यम बनाया। उनकी रचनाएँ हमें हँसाती अवश्य हैं, लेकिन उससे पहले और उसके बाद वे हमें असहज करती हैं, प्रश्नों से घेरती हैं और सोचने के लिए विवश करती हैं। यही कारण है कि उनका व्यंग्य हल्का नहीं, गम्भीर है; मनोरंजक नहीं, अर्थपूर्ण है; और क्षणिक नहीं, दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ने वाला है।

हिंदी व्यंग्य की परंपरा हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रघुवीर सहाय, श्रीलाल शुक्ल, ज्ञान चतुर्वेदी जैसे सशक्त रचनाकारों से समृद्ध रही है। गिरीश पंकज इसी परंपरा के उत्तराधिकारी हैं, लेकिन उनकी रचनात्मक पहचान स्वतंत्र और विशिष्ट है। उनके व्यंग्य में संवेदना, अनुभव और विवेक एक साथ चलते हैं। जीवनानुभव और पत्रकारिता का प्रभाव गिरीश पंकज की रचनात्मक शक्ति का आधार है। पत्रकारिता ने उन्हें समाज को नज़दीक से देखने, सत्ता और व्यवस्था के भीतर झाँकने तथा आम आदमी की पीड़ा को समझने का अवसर दिया। यही कारण है कि उनकी रचना 'मिठलबरा की आत्मकथा' में वर्णित घटनाएँ काल्पनिक कम और यथार्थ अधिक लगती हैं। उनके व्यंग्य में अख़बार की खबरें, दफ़्तरों की फाइलें, बैठकों की भाषा, भाषणों की खोखलाहट और योजनाओं की विडंबना सहज रूप से प्रवेश करती है। उपन्यास 'एक गाय की आत्मकथा' जानवरों के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं का चित्रण प्रस्तुत करता है। उपन्यास पॉलीवुड की अप्सरा', फिल्म और ग्लैमर जगत की सच्चाइयों को दर्शाता है। उपन्यास 'ट्रांसजेंडर', यह समाज के उपेक्षित वर्ग के अनुभवों और संघर्षों को उजागर करता है तो 'टाऊन हॉल में नक्सली' छत्तीसगढ़ की नक्सल समस्या पर केंद्रित एक सार्थक उपन्यास है, 'माफिया' उपन्यास साहित्य जगत में घुसपैठ बनाए साहित्य माफियाओं के सच को सामने रखता है ।

गिरीश पंकज की रचनाओं के विषय-वस्तु अत्यंत व्यापक है। वे आम आदमी की रोज़मर्रा के संघर्ष से लेकर राजनीति, प्रशासन, शिक्षा, संस्कृति, मीडिया और साहित्य जगत की विडंबनाओं तक व्याप्त है। उनकी कई व्यंग्य रचनाएँ उस आम नागरिक के इर्द-

गिर्द घूमती हैं, जो हर व्यवस्था का बोझ उठाता है, लेकिन किसी व्यवस्था का लाभार्थी नहीं बन पाता। दफ़्तरों में चक्कर काटता आदमी, योजनाओं की लंबी घोषणाओं के बीच खोया हुआ नागरिक और चुनावी नारों में उलझा मतदाता, ये सभी उनकी रचनाओं में बार-बार दिखाई देते हैं। उनकी कई रचनाओं में दफ़्तरशाही की विडंबना प्रमुख रूप से उभरती है जहाँ फ़ाइलें चलती हैं, फैसले नहीं; बैठकें होती हैं, समाधान नहीं; और आदेश निकलते हैं, लेकिन ज़मीन पर कुछ नहीं उतरता। व्यंग्य रचना में वे दिखाते हैं कि किस तरह 'जाँच समिति' समस्या का समाधान नहीं, बल्कि समस्या को टालने का सबसे सुरक्षित उपाय बन चुकी है।

राजनीति पर लिखे गए उनके व्यंग्य अत्यंत संतुलित हैं। वे किसी एक दल या व्यक्ति पर सीधा प्रहार नहीं करते, बल्कि पूरी राजनीतिक संस्कृति की खोखली नैतिकता को उजागर करते हैं। उनके व्यंग्य में नेता अक्सर विकास की भाषा बोलते हुए दिखाई देते हैं, लेकिन उनकी आँखें कुर्सी पर टिकी होती हैं।

गिरीश पंकज की भाषा उनकी सबसे बड़ी ताकत है। वे भारी-भरकम शब्दावली या दुरूह शिल्प के सहारे व्यंग्य नहीं रचते। उनकी भाषा बोलचाल की है, लेकिन वह साधारण नहीं है। उसमें व्यंग्य की धार है, लय है और संवादधर्मिता है। करुणा और नैतिक चेतना गिरीश पंकज के व्यंग्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता है । वे व्यक्ति को नहीं, प्रवृत्ति को निशाना बनाते हैं। उनके व्यंग्य में कटुता नहीं, बल्कि एक तरह की पीड़ा छिपी रहती है कि समाज ऐसा क्यों हो गया हैढ़

उनकी रचनाएँ नैतिक उपदेश नहीं देतीं, लेकिन नैतिक प्रश्न अवश्य उठाती हैं। वे पाठक से यह नहीं कहते कि 'ऐसा करो', बल्कि यह पूछते हैं कि 'क्या सचमुच यही सही है'

गिरीश पंकज ने साहित्यिक दुनिया और मीडिया पर भी तीखे व्यंग्य लिखे हैं। साहित्यिक सम्मेलनों की दिखावटी गंभीरता, पुरस्कारों की राजनीति, आलोचना की गुटबंदी और मीडिया की सनसनीप्रियता-ये सब उनके व्यंग्य के प्रिय विषय रहे हैं। वे अपनी रचना में दिखाते हैं कि किस तरह साहित्यिक गोष्ठियों में लेखक कम और 'परिचय' अधिक पढ़े जाते हैं। दूसरी ओर मीडिया पर लिखे व्यंग्य में समाचार की जगह 'दृश्य' के महत्व को रेखांकित किया गया है।

गिरीश पंकज का व्यंग्य आज के समय में इसलिए और अधिक प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि वह किसी एक दौर तक सीमित नहीं है। उनकी रचनाएँ बदलते संदर्भों में भी अर्थ देती हैं। सत्ता का चरित्र बदले बिना सत्ता बदल जाए-यह स्थिति उनके व्यंग्य में बार-बार उजागर होती है।

डिजिटल युग, सोशल मीडिया, त्वरित प्रतिक्रियाओं और सतही विमर्श के दौर में उनका व्यंग्य हमें ठहरकर सोचने का अवसर देता है।

छत्तीसगढ़ के माटी पुत्र गिरीश पंकज हिंदी व्यंग्य साहित्य के ऐसे रचनाकार हैं, जिन्होंने व्यंग्य को जिम्मेदारी के साथ साधा है। उनकी रचनाएँ हँसाने के साथ-साथ हमें हमारे समय, समाज और स्वयं से सवाल करने की ताकत देती हैं। वे व्यंग्य को मनोरंजन की सीमा से निकालकर सामाजिक विवेक की ऊँचाई तक ले जाते हैं। गिरीश पंकज का व्यंग्य इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह समय का दस्तावेज़ भी है और समय का विवेक भी। हिंदी साहित्य में उनका योगदान व्यंग्य को एक गंभीर, संवेदनशील और सार्थक विधा के रूप में स्थापित करता है।

परेतिन दाई मंदिर (बालोद)

आदित्य यादव
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर

छत्तीसगढ़ भारत का एक प्राचीन एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्य है, जिसकी संस्कृति उसके इतिहास, भूगोल और आदिवासी जीवन शैली से गहराई से जुड़ी है। रामायण व महाभारत काल से इसका एतिहासिक महत्व रहा है। सिरपुर, मल्हार और रतनपुर जैसे स्थल इसकी प्राचीन सभ्यता के साक्ष्य हैं।

छत्तीसगढ़ तांत्रिक और शैव- शाक्त परम्पराओं का भी केन्द्र रहा है। यहां के लोकपर्व जैसे हरेली, होली, तीज व बस्तर दशहरा सामाजिक एकता और सांस्कृतिक चेतना को दर्शाते हैं। छत्तीसगढ़ के मंदिर इतिहास और क्षेत्रीय आस्था का प्रतीक है।

यहाँ की देवियों, शैव साक्त तांत्रिक परम्पराओं का विशेष प्रभाव दिखाई देता है। अधिकांश मंदिर प्रकृति वन और लोक संस्कृति गहराई से जुड़े हैं। मां दन्तेश्वरी मंदिर, माँ बम्लेश्वरी मंदिर, महामाया मंदिर आदि स्थानीय जन आस्था का केन्द्र है।

तांत्रिक क्रिया को अंजाम देने के लिए डायन की पूजा करने की बाते चर्चा में रहती है पर भारत के छत्तीसगढ़ के बालोद में एक अनोखा मंदिर है जहाँ डायन (परेतिन दाई) की पूजा अच्छे काम के लिए की जाती है ये मंदिर 10, 20 या 50 नहीं अपितु 200 साल पुराना है। मान्यता है कि 200 सालों से परेतिन दाई की पूजा की जाती है । नवरात्र के 9 दिन तो यहां मेले जैसा माहौल भी रहता है। मंदिर को लेकर कई मान्यताएं हैं।

छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में परेतिन का एक प्राचीन मंदिर है । इस मंदिर में एक मूर्ति स्थापित है जिसे छत्तीसगढ़ बोली में परेतिन दाई (परेतिन माता) के नाम से जानते है। स्थानीय ग्रामीण मंदिर को लेकर कई रोचक जानकारियाँ देते हैं । ग्रामीण बताते है कि पहले यह मंदिर नीम वृक्ष के नीचे सिर्फ चबूतरानुमा था । लेकिन धीरे-धीरे मान्यता और प्रसिद्धि बढ़ती गई और जनसहयोग से मंदिर का निर्माण कर दिया गया, मंदिर का निर्माण परेतिन देवी को समर्पित (अर्पित) ईटों से कराया गया है।

बालोद जिले के गुण्डरदेही विकासखण्ड में एक गांव है झींका । गांव के मुख्य सड़क से लगा परेतिन देवी का मंदिर है। देवी के प्रति आस्था या लोगों में डर ऐसा है जानकारी के बाद भी अनदेखा कर आगे बढ़ जाने पर या यहाँ सर झुकाए बिना आगे बढ़ा तो उसे परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

छत्तीसगढ़ के ही नहीं अपितु पूरे भारत के मंदिरों में दान देने की प्रथा है जिसमें अधिकतर पैसा, सोने-चांदी, अन्न आदि दिया जाता है। ध्यानाकर्षित करने वाली बात यह है कि इस परेतिन दाई मंदिर में ईंट, पत्थर, पैरा, हरी घास, मिट्टी, सब्जी, भाजी अर्पित किया जात है। अधिकतर मालवाहक वाहन मान्यतावश दुर्धटना से बचने के लिए इस मंदिर में दान करते हैं।

इस मंदिर में ईंट का दान बड़े पैमाने पर होता है ग्रामीण बताते है कि इतने अधिक ईंट यहां चढ़ते हैं कि ईटो से ही गांव में दूसरे विकास निर्माण कार्य जैसे चबूतरा, नाली निर्माण आदि कार्य किए जाते हैं।

ग्रामीण बताते हैं कि परेतिन दाई किसी का भी अहित नहीं करती है। मान्यता है कि सच्चे मन से प्रार्थना करने वालों की मनोकामना पूरी होती है। अतः दोनों नवरात्रि पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु मंदिर में ज्योतिकलश प्रज्जवलित कराते हैं। मान्यतानुसार यदि कोई जानबूझकर देवी को अनदेखा करता है तो नुकसान होता है।

मान्यतानुसार झींका गांव का यदुवंशी (राउत + ठेठवार) मंदिर में बिना दूध चढ़ाए दूध बेचने चले जाते तो दूध फट जाता है ऐसा कई बार होता है। इस मंदिर की मान्यता काफी पुरानी है। झींका गांव में अधिक ठेठवार यादव है जो आस-पास दूध बेचने का कार्य करते हैं जो रोज देवी को दूध अर्पित कर जाते हैं।

निष्कर्ष :- छत्तीसगढ़ में जिस प्रकार माँ शीतला को ग्राम रक्षक देवी के रूप में पूजा जाता है। ठीक उसी प्रकार अधिकांश छत्तीसगढ़ के क्षेत्र में परेतिन दाई को बेर, पीपल, बरगद, नीम के पेड़ों में पूजा जाता है। परेतिन दाई, कई समाज (राउत समाज) की कुलदेवी के रूप में पूजनीय है। इस देवी को नवजात शिशु के रक्षा व विकास के लिए चुड़ी - पाटा अर्पित करने की प्रथा है।

गाँवों में रची-बसी लोक-कलाओं की निरंतरता, और जीवंत परम्पराएँ ही भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषता है ।

- डॉ. बलदेव मिश्र

''श्रीपुर (सिरपुर) का प्राचीन इतिहास''

आकाश कुमार
एम.ए द्वितीय सेमेस्टर

''श्रीपुर प्राचीन दक्षिण कोसल की राजधानी था जो अपने बौद्ध विहारो, हिंदू मदिरों तथा सांस्कृतिक समृद्धि के कारण मध्य भारत के प्रमुख नगरों में गिना जाता था । ''

अलेक्जेंडर कनिंघम

भूमिका :

श्रीपूर एक प्राचीन एवं ऐतिहासिक स्थल है जो अपने धार्मिक सांस्कृतिक और पुरातात्विक महत्व के लिए जाना जाता है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही सभ्यता और आस्था का प्रमुख केंद्र रहा है। श्रीपुर का उल्लेख विभिन्न लोककथाओं, जनश्रुतियों तथा ऐतिहासिक परम्पराओं में मिलता है। यहाँ स्थित प्राचीन मंदिर, विशेष रूप से लक्ष्मण मंदिर, इस क्षेत्र की समृद्धि स्थापत्य कला और धार्मिक परम्परा का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। श्रीपुर न केवल आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि यह क्षेत्रीय इतिहास के अध्ययन के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्थल माना जाता है।

''जहाँ पत्थर भी इतिहास बोलते हो,
जहाँ आस्था ने शिल्प का रूप लिया हो -
वहीं भूमि श्रीपुर कहलाती है। ''

इतिहास :-

''पुराणेषु प्रसिद्ध यत्, धर्मेण परिपालितम् ।
तदेव क्षेत्रं श्रीमतं, इतिहासेन भूषितम् ।।''

भावार्थ :

जो क्षेत्र धर्म से संरक्षित और पुरातन परम्पराओं से प्रसद्धि हो, वहीं इतिहास से अलंकृत होकर श्रीमंत (ऐश्वर्ययुक्त) बनता है।

पृष्ठभूमि :-

सिरपुर का पाण्डुवंश

शासक प्रवरराज 2 के कमजोरियों का लाभ उठाकर दक्षिण कोसल में पाण्डु वंश की स्थापना की और सिरपुर को राजधानी बनाकर शासन किया ।

जबकि पाण्डु वंश का आदिपुरुष उदयन को माना जाता है। छत्तीसगढ़ में शासन करने से पूर्व पाण्डु वंश का शासन मैकाल अंचल में था ।

पाण्डुवांशीयों ने पहली बार इस प्रदेश को कोसल प्रदेश और अपने को कोसलाधिपति कहा ।

परिचय :-

- शासन काल - 6-7 वी शताब्दी
- राजधानी - सिरपुर (चित्रांगदपुर)
- आदिपुरूष - उदयन (उल्लेख - कालिजर शिलालेख
- संस्थापक - इन्दबल
- प्रतापी राजा - महाशिव तीवरदेव, महाशिवगुप्त बालार्जुन
- छत्तीसगढ़ का- स्वर्णकाल - महाशिव गुप्त बालार्जुन पाण्डुवंश (स्थानीय
- छत्तीसगढ़ का उत्कर्षकाल - महाशिव तीवरदेव
- छत्तीसगढ़ में- मंदिरों के निर्माण- का काल - पाण्डुवंश (स्थानीय राजवंशों में)

वंशावली

↓

उदयन आदि पुरुष

↓

इंदबल (शरभपुरीय शासक सुदेव राज का सर्वाधिकारी कर्ता)

नन्नराज 1 - ईशान देव - भवदेव रणकेसरी

महाशिव - तीवरदेव - चंद्रगुप्त

नन्नराव 2 - हर्षगुप्त

महाशिवगप्त बालार्जुन/नित्यानंद रणकेसरी

शिवनंदी

सिरपुर का इतिहास :-

सिरपुर महासमुंद जिले का ऐतिहासिक धार्मिक पुरातात्विक महत्व का स्थल है सिरपुर अंचल के गौरवशाली अतीत के अनेक अवशेष सजोये हुए है। जो प्राचीन समय में **श्रीपुर तथा चित्रांगदपुर** के नाम से प्रचालित रहा है। यह महानदी के तट पर स्थित है।

कुछ विद्वानों द्वारा ऐसा माना जाता है कि सिरपुर ही ''महाभारत'' कालीन अर्जुन एवं चित्रांगदा के पुत्र भ्रबुवाहन की राजधानी थी और इसका तत्कालीन नाम चित्रांगदपुर था।

यह छोटा सा गाँव कभी ''**शरभपुरीय वंश**''

तत्पश्चात् (पाण्डुवंशीय) राजाओ की राजधानी रहा है। बौद्ध ग्रंथ ''अवदान शतक'' के अनुसार महात्मां बुद्ध यहाँ आये थे, प्राचीन समय में यह महत्वपूर्ण बौद्ध नगरी थी, जिसके प्रमाण यहाँ मिले चैत विहार एवं अनेक बौद्ध मूतियाँ है।

ह्वेनसांग के यात्रा वृतात :- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 639 ई. (1 वी शताब्दी) में सिरपुर और मल्हार की यात्रा की। इस समय सिरपुर क्षेत्र में महाशिवगुप्त बालार्जुन का शासन था। उन्होंने अपनी पुस्तक ''सी-यू- की'' में छत्तीसगढ़ को ''किया - स - लो '' के नाम से उल्लेख किया है। उनका कहना था कि यहाँ का राजा क्षत्रिय है किंतु बौद्ध धर्म में विश्वास रखता है।

इस समय राज्य में 100 से अधिक संघाराम थे संघाराम में निवास करते थे।

डॉ. गंगाधर मोरेश्वर दीक्षित ने सागर विश्वविद्यालय एवं पुरातत्व विभाग की ओर से यहाँ सन् 1955-56 में उत्खनन कार्य किया था जिससे इस स्थल के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश पड़ा । डॉ दीक्षित के अनुसार सिरपुर 5वीं सदी में आबाद था एवं उस समय यहाँ पर शरभपुर वंश के शासकों के शासन का उल्लेख मिलता है, यहाँ से इस वंश के शासकों के अभिलेख भी प्राप्त हुए है। जो सिरपुर को इनकी राजधानी प्रमाणित करते है, इसके पश्चात् यहाँ सोमवंशीयों का शासन रहा। कालांतर में कल्चुरियों द्वारा बिलासपुर के निकट तुम्मान तत्पश्चात् रतनपुर को अपनी राजधानी बनाया गया । जिससे रतनपुर का महत्व बढ़ता गया एवं सिरपुर का महत्व घटने लगा और अन्ततः इस ऐतिहासिक वैभवशाली नगरी का पतन हो गया। किंतु प्राचीन कला नगरी के रूप में रतनपुर सिरपुर एवं मल्हार प्रसिद्ध है।

सिरपुर के प्रमुख मंदिर (स्मारक):-

केंद्र होने के कारण श्रीपुर को छत्तीसगढ़ का काशी कहा जाता था सिरपुर में देखने योग्य स्मारक है :-

लक्ष्मण मंदिर : (1वीं शताब्दी ईस्वी)

पूर्णतः ईटों से निर्मित लक्ष्मण मंदिर का निर्माण श्रीपुर नरेश शिवगुप्त की माता महारानी वासटादेवी ने करया था, यह विष्णु मंदिर है जो भगवान विष्णु (बैकुण्ठ नारायण) को समार्पित है। इस मंदिर को कालांतर में महाशिवगुप्त बालार्जुन (पाण्डुवंशीय शासक द्वारा पूर्ण करवाया गया । यह मंदिर उतरीय भारतीय मदिरों की तरह नागरशैली से बनी हुई है जिसमें लाल (पक्की) इंटो का प्रयाोग किया गया है। यह मंदिर अपने अनुपम सौंदर्यता के लिए भी विख्यात है । जिसके कारण रवींद्रनाथ टैगोर के द्वारा लक्ष्मण मदिर को अद्‌भुत रत्न कहा गया है।

इस मंदिर में सुंदर गर्भगृह अंतराल और मण्डप की सरंचना है। तथा मंदिर के प्रवेश द्वार पर ही भगवान विष्णु के दशावतार, द्वारपाल एवं गंगा यमुना की मूतियाँ है। यह भारत की सबसे प्राचीन और सुरक्षित ईट - निर्मित मंदिर है, तथा ईंटों पर की गई सूक्ष्म नक्काशी अद्‌भूत है। वर्तमान में यह मंदि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा संरक्षित हैं। इसकी सुंदरता स्वच्छता एवं आकर्षण की तुलना ताजमहल से एडविन अर्नाल्ड (ब्रिटिश विद्वान द्वारा की गयी है।

अन्य मंदिरों में :-

सिरपुर में लक्ष्मण मंदिर के अलावा गंधेश्वर महादेव मंदिर, राममंदिर, आनंदप्रभु कुटीर, विहार, स्वास्तिक विहार आदि दर्शनी स्थल है।

वास्तुकला :-

सिरपुर (प्राचीन श्रीपुर) के प्रमुख मंदिरों की वस्तुकला विशेषकर लक्ष्मण मंदिर प्राचीन भारतीय नागर शैली और ईंट निर्माण परम्परा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

पाण्डुवंशी काल में निर्मित ये मंदिर गर्भगृह, अंतराल और मण्डप की सुव्यवस्थित योजना, संतुलित अनुपात और उर्ध्वमुखी संरचना के लिए प्रसिद्ध हैं। ईंटो पर की गयी सूक्ष्म नक्काशी, द्वारों पर गंगा यमुना द्वारपाल तथा विष्णु भगवान के दशावतार की मूर्तियाँ तत्कालीन शिल्पकौशल की उच्चता को दर्शाती है। ब्रिटिश विद्वान एडविन अर्नाल्ड ने सिरपुर के लक्ष्मण मंदिर को ''भारतीय ईंट - निर्मित मंदिर स्थापत्य कला का अनुपम रत्न'' कहा है। जिससे इसकी कलात्मक महता स्पष्ट होती है। वहीं भारतीय पुरातत्व परम्परा के अध्ययन में अलेक्जेण्डर कनिंघम जैसे इतिहासकारों की दृष्टि में ऐसे मंदिर केवल पूजा - स्थल नहीं बल्कि समकालीन समाज कला और संस्कृति के जीवंत अभिलेख है। इस प्रकार सिरपुर के प्रमुख मंदिरों की वास्तुकला धार्मिक आस्था के साथ-साथ सांस्कृतिक समन्वय और स्थापत्य उत्कृष्टता का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व :-

महाशिवगुप्त बालार्जुन का शासनकाल छत्तीसगढ़ के इतिहास का स्वर्णकाल कहलाता है। क्योंकि उनके शासनकाल में सभी क्षेत्रों का चहुँमुखी विकास (जैसे - साहित्य. कला, धर्म, स्थापत्य हुआ साथ ही महाशिवगुप्त का शासन काल धार्मिक सहिष्णुता में श्रेष्ठतम उदाहरण था। जिसके कारण सभी धर्मो ने स्वतंत्रतापूर्वक विकास किया

जैसे -

1. बौद्ध धर्म :- इन्होंने सिरपुर में अनेक बौद्ध विहार का निर्माण कराया ।
2. वैष्णव धर्म :- लक्ष्मण मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण करवाया ।
3. शैवधर्म :- इन्होंने अनेक शिव मंदिर का निर्माण करवाया

जैसे -

(1) गंधेश्वर महादेव मंदिर (सिरपुर)
(2) बालेश्वर भट्टाक शिव मंदिर
(3) सिद्धेश्वर महादेव मंदिर (पलारी)
(4) अण्डलदेव मंदिर (खरौद)

सभी धर्मो के सौहार्द के मध्य महाशिवगुप्त स्वयं शैव मत को मानने वाला था। वे पाण्डुवंश के सबसे योग्य, प्रतिभावान एवं निर्माणकर्ता शासक थे। साथ ही उसके काल में राज्य का चौतरफा विकास हो रहा था । अतः इसे ''पाण्डुवंशी शासन काल का स्वर्णयुग '' कहा जा सकता है।

निष्कर्ष :- उपलब्ध साहित्यिक पुरातात्विक और अभिलेखीय साक्ष्यो के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि, सिरपुर (श्रीपुर) मध्य भारत का एक अत्यंत समृद्ध बहु धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र रहा है। यह नगर विशेष रूप से 6 वीं - 8वीं शताब्दी ईस्वी के बीच अपने उत्कर्ष पर था, जब यह दक्षिण कोसल की राजधानी के रूप में विकसित हुआ ।

सिरपुर कला, वस्तुकला और धर्म का प्रमुख केंद्र बना। इसका सबसे सशक्त उदाहरण लक्ष्मण मंदिर है, जिसे ''पर्सी व्राउन'' ने उत्तर भारत के प्रारंभिक मंदिर स्थापत्य का उत्कृष्ट नमूना माना हैं।

अतः इतिहासकारों के मत और प्रमुख उदाहरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सिरपुर केवल एक राजनीतिक राजधानी नहीं बल्कि प्राचीन भारत की धार्मिक सहिष्णुता स्थापत्य कला और सांस्कृतिक समृद्धि का जीवंत केंद्र था। भारतीय इतिहास में सिरपुर का स्थान एक ऐसे नगर के रूप में सुरक्षित है जहाँ से हमें प्राचीन भारत की समन्वयवदी सभ्यता को समझने का अवसर मिलता है।

मनुष्य-जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो ।

- पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी

छत्तीसगढ़ के लोकगाथा अउ जनजातीय जीवन

आशीष कुमार जंघेल
एम कॉम 4 सेमस्टर

छत्तीसगढ़ के लोक गाथा अउ जनजातीय जीवन - संस्कृति के अमूल नगीना

छत्तीसगढ़ भारत के हिरदय म बसे एक सुग्घर प्रदेश जिहा के माटी पानी जंगल अउ पहाड़ सब्बो म लोक संस्कृति अउ जनजातीय जीवन के मिठास बगरे हे। ए धरती म लोक गाथा, नाचा - गाना पंथी नृत्य परंपरा अउ परछी कार्यक्रम संस्कृति के अमोल धरोहर आय। जब हमन छत्तीसगढ़ के लोक गाथा अउ जनजातीय जीवन ऊपर रचना करथन तब हमन सटिक कहानी नई लिखन हवय- हमन के अपन संस्कृति अपन पहचान अउ अपन आत्मा ला शब्द म ढाले जाथन ।

लोक गाथा जऊन म आदिवासी जीवन के आत्मा बसथे :- छत्तीसगढ़ के लोक गाथा मन सुग्घर सुन्दर, सरल मिश्रित भावनात्मकता से भरपूर रहिथे । ए गाथा मन म नाचा गान के रूप म जनजातीय जीवन के हर रंग झलकथे। येह तो सोढा कथा पंढरी कथा, लोकगीत महिरा, देवकथा जनजातीय लोक जीवन के परछी चित्र बनाके रखे हे।

लोक गाथा मन म प्रकृति के पूजा धरती देवता के मान्यता अउ मनखे के हर संघर्ष आनंद के कथानक रहिथे। मउका पाय के देवी-देवता के गाथा मरजाद विवाह लोकगीत, सोनहा - सपना गाथा मन म सामाजिकता के रस भरपूर रहिथे।

जनजातीय जीवन के चित्रण - सच्चा अनुभव जीवंत संस्कृति : - छत्तीसगढ़ के जनजातीय लोग गोड़, कोरवा, बॉड महार ओर बनासी सहरिया मोटिया अउ कई जनजाति अपन अलग-अलग बोली रीत-रिवाज, परंपरा, गीत - संगीत के साथ जीवन जियत हे ।

जीवन शैली :- जनजातीय समुदाय जंगल नदी-तालाब पहाड़

खेत के संग अपन जीवन बिताये । ओमन ह प्रकृति के हर वस्तु के पूजा आदर करथे। खेती किसानी मंडई (संगीत-नृत्य) शिकार औषधि-पत्ता के उपयोग सब्बों म प्रकृति के सम्मान दिखथे । ओखर मन के जीवन सरल हे, फेर संस्कृति के गहराई अतका हे कि हर कार्य म गीत नृत्य - भगवान के नाम लेके जुरे हे । खेती के बेरा, बिहाव त्योहार नवां संगी परिवार के आन बोझ गोंड कोटवा मन अपन गीत नृत्य ला बहोत रंगीन बनाय रखे हे ।

लोककला-साहित्य अउ रचना के महत्व :- लोक गाथा अउ जनजातीय जीवन ऊपर रचना बनाना, ओला लिखाथे, गाथे, येले संजो के रखना महत्तम काम हे। ए रचना मन म केवल मनोरंजन नई रहाये बल्कि इतिहास परंपरा, जीवन, दर्शन, सामाजिक व्यवहार प्रकृति मानव के संबंध ए सब्बो चीज के संपोषण हे।

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य म : लोकगीत :- गीत जे मनखे के मन के भाव प्रेम विरह किसान श्रमिक के जीवन के गाथा कहिथे।

अल्हा-उदल कथा - वीर रस के गाथा जे बलिदान वीरता अउ इतिहास के संग जुड़े हे ।

देवता कथा :- स्थानीय देवता देवी के कहानी जे हर गांव म मान्यता के केन्द्र रहिथे ।

पगड़ी कव्वाली छत्तीसगढ़ दोहा चौपाई :- संस्कृति के भाव सरगो होके रखथे। ए रचना मन गांव गांव सभा समारोह उत्सव त्योहार म गाथे-बजाथे, जेकर वजह ले संस्कृति निरंतर जीवित रहिथे।

परंपरा अउ प्रकृति के साथ तालमेल :- छत्तीसगढ़ के जनजातीय जीवन म प्रकृति के अब्बड़ सम्मान हे। ओमन हर चीज म प्रकृति के गुण-गान करथे। नदी के बहाव, जंगल के हरियाली, पहाड़ के ठंड़ा-गर्मी, चकोर कोयल के गीत - ए सब्बो चीज मन रचना म अपन स्थान पाथे।

लोक गाथा म जंगल के देवता नदी के देवी देवता धरती के शक्ति ओमन के पूजा उपासना के कथानक मिलथे ।

जइसे :- महुआ - साता के गीत :- प्रकृति के सुंदरता अउ मेलजोल ला बयान करथे ।

नवां संगी गीत :- नवा जीवन के शुरूआत, परिवार समाज के आशा - आकांक्षा के गीत ।

देवकथा - पराया गीत :- परिवारिक मर्यादा, सामाजिक नियम के कथा गीत ।

सब्बो रचना प्रकृति के स्पर्श म रहिथे, जेकर वजह ले जीवन-विश्वास, धार्मिकता, सामाजिकता सब्बो एक संग बंधे रहिथे।

लोक संस्कृति के अंतरराष्ट्रीय महत्व :- आज के आधुनिक दुनिया म लोक संस्कृति अउ लोक गाथा के महत्व बढ़ गे हे । शिक्षा पर्यटन, शोध के अद्‌भुत छाप दिखथे ।

उदाहरण स्वरूप : -

सांस्कृतिक महोत्सव म लोक नृत्य - गीत के प्रदर्शन
स्कूल - कॉलेज म लोक साहित्य के पढ़ाई - परख
शोध - शास्त्रीय अनुसन्धान म लोक गाथा के अध्ययन
पर्यटन मार्ग म जनजातीय पर्यटन के विकास ।

ए सब्बो क्षेत्र म छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति वैश्विक स्तर म अपन पहचान बनाये रहिथे ।

रचना म भाव भाषा अऊ संवेदना के संगम :- जब हमन लोक गाथा अउ जनजातीय जीवन ऊपर लेख कविता निबंध कथा कहानी रचना करथन तब हमन भाषा के सुन्दरता, भाव के गहराई अउ संवेदना के मिठास ला अपन रचना म समाहित करथन ।

भाषा के महत्व :- छत्तीसगढ़ी भाषा अपन सरलता - मधुरता ले संस्कृति के भाव ला सहज खप म व्यक्त करथे । जनजातीय बोली - भाषा कहावत लोककथा गीत नृत्य ए सब्बो रचना म अलग मिठास ले भर देथे ।

संवेदना के रंग : - रचना म मानवीय संवेदना - प्रेम - दुःख - आशा - विचार सब्बो रंग दिखथे । जन्म-मृत्यु, संघर्ष सफलता, प्रकृति व्यक्ति के संबन्ध ओमन के जीवन के हर मोड़ म संवेदना झलकथे ।

आज के पीढ़ी अउ लोक संस्कृति के भविष्य :-

आज के समय म युवा पीढी जीवन, डिजिटल दुनिया ग्लोबलाइजेशन म Urban बहुते रूचि ले रहिथे । फेर लोक **संस्कृति ला जीवित रखे बर हमर जिम्मेदारी हे कि हमन :-**

लोग गाथा के सहेजना अउ लिखना जारी रखना
लोक कला - संगीत, नृत्य के सीख प्रशिक्षण प्रदान करव,
स्कूल कॉलेज म लोक साहित्य संस्कृति पढ़ाव
पर्यटन सांस्कृतिक कार्यक्रम म लोक कलाकार ला मंच देय,
डिजिटल माध्यम, सोशल मीडिया ब्लॉग पॉडकास्ट म लोक संस्कृति के प्रचार करौव ।

येला करे हे छत्तीसगढ़ के लोककला - साहित्य - संस्कृति नवा पीढ़ी ले जुड़ही अउ अमोल धरोहर आगू बढ़ही ।

निष्कर्ष :- छत्तीसगढ़ के लोक गाथा अउ जनजातीय जीवन एक संगीत एक भावना, एक इतिहास, एक पहचान हे। ए रचना सिर्फ शब्द नई बल्कि जीवन के झरोबा हे। जिहां हर गीत म जीवन के धड़कन हर कहानी म अनुभव हर नृत्य म उत्साह अउ हर कविता म प्रकृति के रंग भर जाथे।

छत्तीसगढ़ के लोक संस्कृति हमर अस्मिता, हमर गर्व, अउ हमर गौरव हे । ए संस्कृति ला बचाय रखना, बढ़ावा देबर, अउ विश्व भर म फैलाना - हमर सबसे बड़े कार्य हरे ।

छत्तीसगढ़ की रजत जयंती

साहिल कुमार
एम.एस-सी.

यह धरती साधारण नहीं है,
यह छत्तीगढ़ महतारी है।
इसी महतारी के गोद में,
धान की हरियाली लहारती है।
इसीलिए तो छत्तीसगढ़,
''धान का कटोरा'' कहलाती है।

यहीं जन्मा था वीर शहीद नारायण सिंह,
जिसने अन्याय के आगे सिर नही झुकाया।
किसान, गरीब और इंसाफ की खातिर,
हँसते- हँसते फाँसी का फँदा अपनाया ।

बस्तर केवल एक अंचल नहीं,
वह साहस, संघर्ष और कला की पहचान है।
लोहा, लकड़ी और औषधि से भरी,
बस्तर की संस्कृति की अलग ही शान है।

इस धरती ने कलाकार भी दिए,
जो विदेशों तक पहचान दे गए।
''**तीजन बाई**'' की पंडवानी में,
महाभारत जीवित बन गए।
हमारी छत्तीसगढ़ी बोली में मिठास है,
इसीलिए यहाँ की संस्कृति में अलग
ही बात है।

कल हाथ था हाँथो में,
आज मशीनें चल रही है।
पर पसीने की कीमत वही है,
बस राहे बदल रही है।

छत्तीसगढ़ में खास व्यंजन है, बनता,
चीला, मुठिया, ठेठरी, खुरमी स्वादिष्ट है लगता ।
यहाँ स्वाद दिखाने से नहीं,
माटी की सच्चाई से है, बनता ।

ढोल, नंगाड़े और मादर की थाप
पंथी, करमा, सुआ और राउत नाचा में है, प्राण।
छत्तीसगढ़ी नृत्य और संगीत में है, अपनापन
जिससे गांव का महकता हे, घर-आँगन।

यह केवल अतीत की कहानी ही नहीं,
यह वर्तमान की शक्ति, भविष्य की उड़ान,
संस्कृति, कला एवं प्रेमभाव यहाँ की आत्मा है,
और आधुनिकता यहाँ की पहचान ।

''रजत दिवस यह बोल रही है,
छत्तीसगढ़ की परंपरा, संस्कृति को है बनाए रखना ।
महतारी के संपनों को विकसित है, करना
अब यह विकास और परंपरा को जारी है रखना ।

''रजत जयंती के अवसर पर, छत्तीसगढ़ महतारी के
गौरवशाली अतीत को प्रणाम ।
छत्तीसगढ़ को भविष्य में उज्जवल और समृद्ध बनाना है,
हमारा काम ।

जंगल कट जाने दो

रूपाली वर्मा

बी.एस.-सी. (सीए) 6 वां सेमेस्टर

जंगल कट जाने दो ......

प्रकृति की सुंदरता को मिट जाने दो,

जंगल कट जाने दो ।।

कभी हसदेव, कभी सरगुजा, कभी अरावली, चाहे सूखे नदियां जीवन वाली ,

पेड़-पौधे और संस्कृति सब नष्ट हो जाने दो,

सूख जाने दो सपनों का भारत ,

सबको तड़प-तड़प कर मर जाने दो,

चिड़ियों की चहचहाहट, जानवरों की आहट,

सब शून्य हो जाने दो,

क्या फिर भी मिलेगा मानव को सुकून

जंगल कट जाने दो ।

जब तक मुश्किल ना हो जाए सांस लेना ,

उस हद तक विकसित हो जाने दो,

जंगल कट जाने दो।। ऐसा ही विकास चाहते हो तो जंगल कट जाने दो।

यह कैसा मयमय विभ्रम है कैसा यह उन्माद, नहीं ठहरता तू, आई क्या तुझे गेहूँ की याद?

- मुकुटधर पाण्डेय

मैं छत्तीसगढ़ हूँ

अनुभव झा
बी. एससी. द्वितीय सेमेस्टर

मैं छत्तीसगढ़ हूँ, मैं छत्तीसगढ़ हूँ।
और यह है मेरा सफर,
मेरा जन्म सन् 2000, 1 नवम्बर ।

मैं राम लाला का ननिहाल, माँ कौशल्या का धाम हूँ।
मैं भक्ति और श्रद्धा से भरा चंद्रखुरी ग्राम हूँ ।

मै धान का कटोरा, मैं मक्के की खदान,
मैं दुबराज चावल की सुगंधित पहचान ।

मैं कोयला, बॉक्साइट, लौह खनिज की खदान,
मैं बालको बीएसपी एनटीपीसी में गढ़ूँ, मेरा भारत महान ।

मैं आईआईटी आईआईएम एम्स में बनाएँ युवाओं का भविष्य,
संगीत महाविद्यालय खैरागढ में, आइएगा आप अवश्य ।

मैं हूँ पंथी, राउत नाचा कर्मा गीत को समाये,
मेरे कारीगरों की हस्थशिल्प कला, सबके मन को भाये ।।

रायपुर की चहल-पहल, बिलासपुर का व्यापार,
मैं छत्तीसगढ़ हूँ, स्वर्णिम भविष्य का आधार ।

मैं छत्तीसगढ़ हूँ, हृदय में बसाओ मेरा प्यार ।
यह छत्तीसगढ़ का गीत है, गर्व से गाओ हर बार ।

छत्तीसगढ़ - प्रगति का रजत -पथ ....

तोमेश कुमार देशमुख
बीएससी 2 सेमेस्टर (सीबीजेड)

अरपा पैरी की धारों से, जो पावन विहान आया है,
पच्चीस वर्षो के माथे पर, आज गौरव का चन्दन छाया है।
महतारी की ममता ओढ़े, जो स्वप्न बुना था पुरखों ने,
वो बीज आज वटवृक्ष बना, खुशहाली का वर लाया है।

धान के कटोरे में गूँजी, जब श्रम साधना की लोरी,
बस्तर की अरण्य-संस्कृति ने, अपनी गाथा फिर से जोड़ी।
महानदी की लहरों में, कल कल करती तरक्की है,
हर गाँव, डगर और शहर यहाँ, रच रही नई इक शक्ति है।

कहीं भिलाई का इस्पात बना, भारत का सुदृढ़ आधार यहाँ,
कहीं तरीथगढ़ की शीतलता, करती प्रकृति का श्रृंगार यहाँ ।
खनिजों की अनमोल सम्पदा, माटी का मान बढ़ाती है,
और यहाँ की भोली संस्कृति, सबको अपनाती जाती है।

ये रजत जयंती पर्व नहीं, ये संकल्पों की एक धारा है,
नव्य छत्तीसगढ़ गढ़ने का, अब गूँज रहा ये नारा है।
पच्चीस वर्षों का सफर हुआ, अब स्वर्ण शिखर की बारी है,
महतारी के अंचल में खुशियाँ, सदा रहे ये जिम्मेदारी हमारी है।

मध्य प्रान्त की कोख से जन्मा, ये वीर प्रसूता माटी है,
जहाँ कण-कण में लोक देवता, और साँसों में परिपाटी है।
पच्चीस सालों के इस सफर ने, अपनी एक पहचान गढ़ी,
कभी न रूकने वाली जन-गण की,एक नई मुस्कान गढ़ी ।

पंथी के पैरों की थाप यहाँ, और करमा का उल्लास जवाँ,
बस्तर के घने अरण्यों में, गूँजता मांदल का गान यहाँ ।
हरेली की वो हरियाली, और तीजा पोरा का दुलार,
संस्कृति के महाकुम्भ में, झलकता अपनों का प्यार ।

धान के स्वर्ण कटोरे में, जब श्रम साधना पलती है,
भिलाई की भट्ठियों में, ही देश की धड़कन चलती है।
हसदेव के आँगन से निकलती, बिजली की उजयारी है,
गाँव-गाँव में पहुँच रही, अब प्रगति की सवारी है।

चित्रकूट के जलप्रपातों की, मदमस्त और पावन धारा ,
सिरपुर के खंडहर कहते हैं, वैभवशाली इतिहास हमारा ।
वनवासी के सीधेपन में, शिव का ही वास झलकता है,
अबूझमाड़ की माटी में, आदिम गौरव दहकता है।

बढ़े कदम अब थमें नहीं, गढ़बो नव छत्तीसगढ़ हम,
मिट जाए पीड़ा माटी की, रहे न कोई आँखे नम ।
जय हो छत्तीसगढ़ महतारी, जय हो तुम्हारी शान की,
जय हो उन अमर शहीदों और, अन्नदाता किसान की।
जय जोहार । जय छत्तीसगढ़ ।।

हम जो समय के साथ चलते हैं

के. सोनल (एम. ए. इतिहास, प्रथम वर्ष)

सिर्फ आज में हम जीते नहीं,
ना बस कल की बात करते हैं,
हम कदम बढ़ाते वर्तमान में,
पर साथ सदियों को धरते हैं।

पुराने पन्नों कि सिलवटों में
धुंधली अवाजें जागती हैं,
राजसिंहासन, टूटी जंजीरें,
बीती सांसे कुछ कहती हैं।
हम सुनते हैं खामोश युद्धो को,
आंसू, साहस, हार, विजय
कैसे राख से उठकर फिर,
लिखी गई उम्मीद नई-नई,

इतिहास हमें यह सिखलाता है,
सत्ता सदा अडिग नहीं रहती,
सच दब सकता है कुछ पल को,
पर चुप रहकर भी हार नही मानती ।

हम यादों के प्रहरी बनकर,
कल और आने वाले कल के बीच ,
अधूरी कहानियाँ पढ़ते हैं,
ताकि नया सवेरा हो खींच ।

जब कोई पूछे -
''क्यों जीते हो बीते पलो में
क्यों ढूंढते हो धूल में जीवन''

हम मुस्कुरा इतना कहते -
अतीत अंधेरा नहीं है,
वह तो रोशनी है
जिसमें हम आगे बढ़ते हैं।

मोर छत्तीसगढ़

अनुपमा कश्यप
प्राध्यापक (रसायन)

सिरि रामजी के पियारे ननिहाल हावै
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड़ सुघ्घर लागे ।
धन्य होगे कौसल देस ह, धन्य कौसल्या मैया
इहां के माटी में खेलिस ए, नानकुन राम ललैया
ओकर मीठ-मीठ बानी, घुंघरू पैरी बाजे
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड़ सुघ्घर लागे ।

इहां महामाया बम्लेश्वरी, दंतेश्वरी समलई मैया,
तुरतुरिया में जन्मे लव कुस जननी सीता मैया
शीतला माता के छइहां हर, सुहावन लागे
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड़ सुघ्घर लागे ।

शिवनाथ, हँसदेव, इंद्रावती, मांड, अरपा, पैरी ला जानी
डंकनी, शंखिनी नदिया कलकल देवता सबला पानी
महानदी के पानी मीठ-मीठ लागे
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड़ सुघ्घर लागे ।

तेंदू, चउर, कोदो, अऊ कुटकी, रागी, हर्रा, बहेरा
धान कटोरा कइथे एला, महुआ ले उजियारा ।
हरियर धानी चुनरी ओढ़, भुइंया दुल्हिन लागे
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड सुघ्घऱ लागे ।

लोहा कोयला के भंडारी माटी उगलत टिना,
देवभोग हर उगले हीरा, अउ उगले सोना
हरियर जंगल खेत सिंगार, बड़ सुघर लागे,
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड़ सुघ्घर लागे।

शिवरी नारायण, चंदखुरी, सिरपुर, राजिम, डोंगरढ़,
रामलला के चरण पड़िस इहां धन्य हे छत्तीसगढ़
इहां कण-कण में हावे राम पावन लागे
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड़ सुघ्घर लागे ।

सिरि रामजी के पियारे ननिहाल हावे
मोला छत्तीसगढ़ के माटी सबले बढ़िया लागे।।

विभिन्न गरिमामय पद पर आसीन महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्र/छात्रायें

दिलीप उइके
डिप्टी कलेक्टर

सुष्मिता टोंडरे
डिप्टी क्लेक्टर

संदीप कुमार
डी.एस.पी (पुलिस विभाग)

स्निगधा सलामे
डीएसपी

वसीम अक्रम
साईंटीफिक ऑफिसर
छ.ग. पुलिस विभाग

योगिता
साईंटीफिक ऑफिसर
छ.ग. पुलिस विभाग

निशिकिता दास
प्रोबिसनरी ऑफिसर
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

धर्मेश देशमुख
यूपीएससी
(जियोलॉजीस्ट)

विकास सिंह राजपुत
माईनिंग इंसपेक्टर
सी.जी.पी.एस.सी.

प्रिय सिंह
माईनिंग इंसपेक्टर
सी.जी.पी.एस.सी.

संदीप
माईनिंग इंसपेक्टर
सी.जी.पी.एस.सी.

दीपेश
माईनिंग इंसपेक्टर
सी.जी.पी.एस.सी.

पुकेश नाग
माईनिंग इंसपेक्टर (सीजीपीएससी)

अंकित वर्मा
अस्सिटेंट जियोलॉजिस्ट

प्रियंका कुशवाहा
कॉपरेटिव इंसपेक्टर

खुश्बु यादव
अस्सिटेंट हाइड्रोलॉजिस्ट

महाविद्यालय के अनेक गतिविधियों में सम्मिलित होने आये मुख्य अतिथि

महाविद्यालय अखबारों के सुर्खियों में

आज के वैश्वीकरण युग में हिन्दी अपनी जड़ों से जुड़े रहने का माध्यम : डॉ. अजय

विज्ञान महा. में विश्व हिन्दी दिवस

दुर्ग, 17 जनवरी (देशबन्धु)। शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग के हिंदी विभाग द्वारा विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.अजय कुमार सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी पढ़ना केवल पाठ्यक्रम की आवश्यकता नहीं बल्कि भारतीय जीवन दृष्टि, संस्कृति और संवेदना को समझने का सशक्त माध्यम है। इसके अध्ययन से व्यक्ति के विचार, भाषा और व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। आज के वैश्वीकरण और तकनीकी युग में हिंदी अपनी जड़ों से जुड़े रहने का माध्यम है। यह हमारी सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ करता है और मानवीय संवेदना को प्रसारित करता है। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.अभिनेष सुराना ने स्वागत उद्बोधन में हिंदी भाषा के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं वैश्विक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य हिंदी भाषा के वैश्विक महत्व को बताना, प्रचार - प्रसार करना एवं सांस्कृतिक मूल्यों को जन - जन तक पहुंचाना है। जिससे हिंदी भाषा राष्ट्रीय एकता की सशक्त कड़ी बने और इसके माध्यम से भारतीय मूल्य विश्व पटल पर स्थापित हो। कार्यक्रम में आर्ट्स क्लब के संयोजक एवं अंग्रेज़ी की विभागाध्यक्ष डॉ मर्सी जॉर्ज ने इस अवसर पर आयोजित आर्ट्स क्लब के द्वारा विभिन्न गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अंतर्गत छात्रा रौशनी द्विवेदी द्वारा जन जन की भाषा हिंदी कविता का सस्वर पाठ, दार्वेंद्र द्वारा हेलमेट जरूरी ...

आयोजन : बसंत पंचमी के अवसर पर साइंस कॉलेज में हुआ रंगारंग स्पंदन कार्यक्रम

स्पंदन में विद्यार्थियों ने दी विभिन्न प्रदेशों के लोक गीत और नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति

स्पंदन, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का उत्सव

आनंद मेले का आयोजन

Workshop on NEP, Indian Knowledge System begins

Eminent academicians, officials, and college principals from across Chhattisgarh participated.

Ministers inaugurating the workshop

Central Chronicle News

BHILAI: A two-day workshop on "Integration of National Education Policy-2020 and Indian Knowledge System as a Holistic Educational Concept" commenced on Friday at Government Vishwanath Yadav Tamaskar Postgraduate Autonomous College, Durg. The event was inaugurated by Higher Education Minister Tank Ram Verma and Skill Development and Technical Education Minister Guru Khushwant Saheb.

In his address, Minister Verma said NEP-2020 represents India's civilizational traditions and cultural heritage, extending beyond bookish knowledge to a holistic way of life. He emphasized the revival of Indian knowledge traditions such as Vedas, Upanishads, Ayurveda, mathematics, yoga, and philosophy, noting their relevance for present and future generations. He added that the policy will play a vital role in realizing Prime Minister Modi's vision of a developed India by 2047. Minister Guru Khushwant Saheb highlighted the state government's efforts for effective implementation of NEP-2020, stressing its role in connecting youth with modernity while grounding them in India's traditions and culture.

Special guest Dr. Atul Kothari, National Secretary of Shiksha Sanskriti UthanNyas, underlined the need for collective scholarly efforts to ensure effective execution of NEP-2020.

FASTFACTS

- The Gurukul tradition was highlighted as a model of character building and discipline.
- Ministers emphasized NEP 2020's role in realizing India's vision of becoming a developed nation by 2047.

Eminent academicians participate

The workshop saw participation from leading academicians including Prof Alok Chakrawal, Vice-Chancellor, Guru Ghasidas Central University; Prof Manoj Kumar Srivastava, Shaheed Mahendra Karma University; Prof ADN Vajpayee, Atal Bihari Vajpayee University; Prof Virendra Kumar Saraswat, Pt Sundarlal Sharma University; and Dr Arun Arora, CSVTU Bhilai. Senior officials, NEP nodal officers, IQAC representatives, and principals of numerous colleges also attended. Scholars emphasized collective responsibility in enriching NEP-2020.

विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर अ... नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मुख्य ध्येय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर दो दिवसीय कार्यशाला

दुर्ग, 3 जनवरी (देशबन्धु)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य ...

...वित रहती है छत्तीसगढ़ की पहचान:यादव

...यित्व है, क्योंकि ...का ज्ञान ग्रामीण ...त रूप से मिलता ... डॉ. पी.सी.लाल ...ढ़ी लोक कथाओं ... में युगीन चेतना ...न देते हुए कहा कि ...त्र लोक से प्रेरणा ... छत्तीसगढ़ी लोक ... गाथाएं मानवीय ...णा, दया, समता और राष्ट्रभावना की चेतना से ओतप्रोत हैं। यही युगीन चेतना हमारे लोक साहित्य को अमर बनाती है। द्वितीय वक्ता डॉ. सियाराम साहू ने छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का रचनात्मक संसार विषय पर कहा कि छत्तीसगढ़ी लोकगीत छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक आत्मा है। हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी ने कहा कि विद्यार्थियों के भविष्य और प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से अपनी मातृभाषा की जानकारी अवश्यक है। लोक संस्कृति वेदों की शिक्षाओं का सरल और व्यावहारिक रूप है, जिसमें छत्तीसगढ़ की अस्मिता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। कार्यक्रम में अर्थशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष के. पद्मावती, डॉ. तरुण साहू, डॉ. रजनीश उमरे, डॉ. रमणी चंद्राकर, डॉ. लता गोस्वामी, शोधार्थी अतुल केसरवानी, टंकलाल निराला, कपिल, केलमती पटेल, निर्मला पटेल, लक्ष्मीन सहित स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। संचालन डॉ. अंमकुमारी देवांगन तथा आभार प्रदर्शन डॉ. शारदा सिंह ने किया।

● राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण विषय पर कायशाला

भारतीय ज्ञान परम्परा अतीत ही नहीं, वर्तमान और भविष्य की मार्गदर्शक, आधुनिकता के साथ संस्कृति से जोड़ने वाला

सामूहिक प्रयास से ही मिलेगी सफलता

राज्य सरकार लगातार इस विषय पर फैला रही जागरूकता

ज्ञान परम्परा अतीत की धरोहर नहीं वर्तमान और भविष्य की भी मार्गदर्शक

शिक्षा नीति : साइंस कॉलेज में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर दो दिवसीय कार्यशाला उद्घाटित

संस्कृति, प्रकृति एवं प्रगति के अनुरूप हो देश की शिक्षा नीति

एनईपी का आधार अध्यात्म एवं नैतिकता- टंकराम वर्मा

भारतीय संस्कृति को जोड़ने का प्रयास- खुशवंत साहेब

अंतर्विषय अध्ययन की सुविधा

शॉर्ट टर्म इंटर्नशिप से हुई शुरुआत

■ स्टूडियो ज्ञानवाणी का लोकार्पण

इन विश्वविद्यालयों के कुलपति शामिल हुए

महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा अनेक प्रतिस्पर्धाओं में प्राप्त मेडल

युक्ति वर्मा
एम.एस.सी फाइनल
बास्केट बॉल में गोल्ड मैडल

टी. सुरेश
पी.जी.डी.सी.ए. प्रथम सेमेस्टर
फुटबाल में सिल्वर मैडल

उज्जवल कुमार
बी.ए. प्रथम वर्ष
फुटबाल में सिल्वर मैडल

अनुभव यदुवंशी
बी.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर
फुटबॉल में सिल्वर मैडल

अनजनेय तिवारी
पीजी डिप्लोमा इन योगा
फुटबॉल में सिल्वर मैडल

सुमीत गोस्वामी
डिप्लोमा इन इंग्लिश
फुटबॉल में सिल्वर मैडल

सुजल कुमार
बी.काम. चतुर्थ सेमेस्टर
फुटबॉल में सिल्वर मैडल

खेमचंद आर्या
बी.काम. प्रथम सेमेस्टर
फुटबाल में सिल्वर मैडल

रागिनी साहू
एम.एस. डब्ल्यू. द्वितीय सेमेस्टर
भाषण प्रतियोगिता (NIC) हरिद्वार में
सांत्वना प्रमाण-पत्र

हमर छत्तीसगढ़ के भुईया, महान हे भईया

यागिनी देवांगन
बीएससी चौथा सेमेस्टर

हमर छत्तीसगढ़ के,
पावन के भुइयाँ,
तीन भाग म बंटे,
सुग्घर राज्य हे भइया।

सरगुजा रायगढ़ के पाठार,
उत्तर के शान हे,
दक्षिण के बस्तर म,
प्रकृति -मनखे एक समान है,
धान-गेहूँ-दलहन के उपजइया,
मध्य म घना वन के मैदान हे ।

साल-सागौन-बाँस के हरियर,
जंगल इहां हे,
वन आवरण के दृष्टि म,
जेखर स्थान चौथा हे,
इहाँ के घना वन म,
खनिज-संपदा अपार आय,
कोयला, लोहा, टिन के संग
बॉक्साइट डोलोमाइट, चूनापत्थर के,
घलो विशाल भंडार आय ।

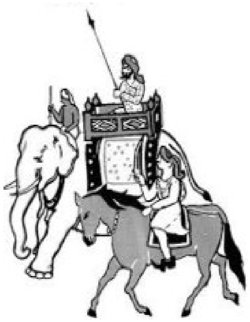

छाती ल चीर के एखर,
महानदी ह बोहाथे
झरना हर घलो,
झर-झर के गोहार लगाथे,
शिवनाथ, इंद्रावती, हसदेव ह,
मिलजुल अरपा-पैरी संग,
धन-संसाधन अउ कृषि ल,
इहाँ आधार बने देथे ।

काली-लाली सोनारी इहां के माटी ,
किसान जेमा धान उगाय,
घाट, पहाड़ी अउ डोंगरी,
जम्मो प्रकृति एखर गहना आय ।
अइसन लहर-लहर,
लहरावत पुरवइया,
सुंदर महकत,
इहाँ के भुइयाँ,

जेन हमर, अभिमान हे भइया.
इही माटी, मोर मान हे भइया.
हमर छत्तीसगढ़ महान हे भइया ।।

अइसन त हमर छत्तीसगढ़ हरे

माही सोनी
बी.एस-सी. छठवाँ सेमेस्टर

होत बिहान करथे इहा, सबो महानदी के स्नान
बम बम भोले करत सब सावन मा,
जाथे सबो कुलेश्वर के धाम
चारो धाम के नाम लेके, सब राजीव लोचन मा आथे
छत्तीसगढ़िया सोनहा माटी के सुगंध सबला भाथे ।

महामाया के माया हा खिचत सबला इहा लाथे,
त दउड़त - दउड़त सब दरशन बर
रतनपूर अऊ बम्लेश्वरी आथे,
हरे-भरे, वन पहाड़ अऊ झरना के नजारा सबला भाथे
तेखरे सेती त सब झन बस्तर, कांकेर, गुण गाथे।

धान के कटोरा एहा भारत के शान कलहाथे,
कोइला, स्पात अऊ उद्योग बर घलो जाने जाथे,
बहुत हे घूमंतू प्राणी इहा,
जे तहुर भाषा मा ट्राईबल कहलाथे
जेखर बात जाने बर लोगन दूसर देश ले घलो आथे ।

लव कुश हे जन्म इहा, त तुर्की तीरन दु गाँव हवे
कौशल्या के जन्म भूही हे, राम के इहा पग हे परे
हेरली ले फागुन तक सबो तिहार इहा झरे
तरिया के भंडार रायपुर ह इहा के राजधानी हरे ।

उपजाऊ इहा के भूमि ह जे सबो झन के पोसन करे
साल महुआ के भंडार इहा, नीम बरगत के सब पग ला परे
बस्तर के दसेहरा ला देख सबके आखी ह बरे
बांछे खिल त सबो इहा,
सुआ कर्मा पंथी नृत्य सबो परब म करे।

का का बात बता डरो में तोल अइसन त इहा के बात ह हरे,
लोककला अऊ संस्कृति ले हम छत्तीसगढ़ भरे,
अइसन त हमर छत्तीसगढ़ हरे,
अइसन त हमर छत्तीसगढ़ हरे।

मोर बस्तर यात्रा : प्रकृति ले मिले सीख

विवेक कुमार साहू

बी.एस-सी. पष्ठम सेमेस्टर

जब पहुँचय बस्तर माटी,
मन म उठिस अजीब सी शांति ।
हरियर जंगल बाहें पसारिस,
जइसे धरती मोला दिस सिख।
चित्रकूट के गरजत झरना,
दूध जइसन पानी झर-झर।
ओला देख के मन कहिस मोर -
''बहते रह, मत हो ठहर''।
तीरथगढ़ के सीढ़ी पानी,
पत्थर म अपन रद्दा बनाय ।
सिख दिस मोला धीरे-धीरे,
मेहनत ले सब संभव हो जाय।
कांगेर घाटी के गहिरा गुफा,
अंधियार म रहिस उजियार ।
समझ आय 'जिनगी म संगी,
अंधियार म छुपे अवसर अपार ।'
'साल- सागौन' खड़े अडिग,
आंधी - तूफान ला सहिथें।
ओमन कहिन - मजबूत बनव,
मुश्किल म कभू मत डगमगाव ।
इंद्रावती नदिया बहत रहिस,
चुपचाप अपन गीत सुनावत ।
सिख दिस-अपन काम करत रहव,
बिना दिखावा के, आगे बढ़त रहव ।
'बस्तर' के भोलापन मनखे म,
सरल मुस्कान, मीठ बोली ।
समझायिस - ''धन- दौलत से जादा,
मया होथे सबले डोली''।
मोर ये यात्रा सिरिफ घुमई नइ,
जीवन के पाठ पढ़ायिस
धीरज, साहस, मेहनत, सादगी -
प्रकृति खुद मोला सिखायिस।
अब जब लौट के आवत हंव.
मन म बस्तर बस गे हवय।
जिनगी म चाहे जऊन डगर आही,
प्रकृति के सिख सदा संग रहीय।

छत्तीसगढ़ की महिमा

डॉ. कीर्ति पाण्डेय
(अतिथि व्याख्याता , भूगोल)

उद्भव है, चित्रोत्पला का, वह है 36 गढ़ों का गढ़ ।
चित्रकोट व कुटुमसर का, बखान करता, वह है छत्तीसगढ़ ।
छत्तीसगढ़ के वनों से गुजरे, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम
शबरी के झूठे बेर खाए, नाम पढ़ा शिवरीनारायण धाम ।
राजिम का संगम पावन, जैसे प्रयाग महान
जहाँ गूंजे वाणी कबीर की, देते मन को सच्चा ज्ञान ।
जहाँ वगभाचार्य जी की भक्ति, कृष्ण प्रेम रसधार
तीजन की तान तम्बूरा की, सुनाते जीवंत महाभारत का सार।
धान का कटोरा कहलाये, जहाँ है खनिजों का खान
कोयला, इस्पात व एल्युमिनियम का, उत्पादन है देश में महान ।
छत्तीसगढ़ की माटी बोले, सदा सच्चा ज्ञान
धान के कटोरे में बसता, मेहनत का अभियान ।
दिवाली की सुआ गीत गूँजे घर-घर आँगन,
नारी का, सरल सीधा और भोला मन ।
पंथी, राउत, करमा की तान,
नाच-गीत व लोक कला में दिखता स्वाभिमान ।
जहाँ रहते है सीधे सादे, न ही कोई छलिया
इसीलिए नाम गूंजे देश विदेश में,
छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया

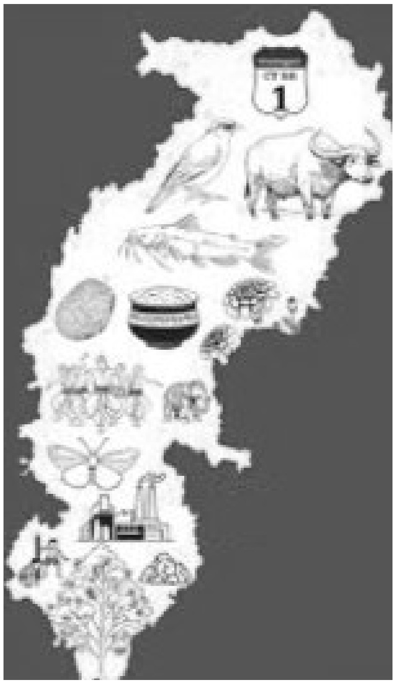

हमर पुरखा स्व. श्री पवन दीवान अउ स्व. श्री लक्ष्मण मस्तुरिया के कविता- प्रस्तुति - डॉ रमणी चंद्राकर

कइसे करे किसान - पवन दीवान

करलइ हे भगवान बताओ
कइसे करे किसान
नवा-नदिया धोदका डबरी
खेत सुखाने
जाबले पेरिस दुकाल जी संगी
हमर लेखे संसार सुखागें
परे चिरइया सुनरे भइया
कइसे पार लगावो नइया

पेट म मुसवा गज़ब दंदोरे
लड़का करथे कल्लर कइया
चिरहा फरिया म लड़का रोवे
झेंझरी भइगे लुंगरा
चुंदी लत के मंग उजरगे
अउ चिटि यागे फूंदरा

सक्कर ल चांटा मन खादिन
तेल ल पी दिस मुसवा
मनखे होगे रिंगी चिंगी
नेता होगे कुसवा
दूदी दाना गंहु मिलत हे
थोथना म चटकालौ

हमर कमाई म पटेला मन
चारेच दिन मट कालऔ
कहां ले लसलस चुरे अंगाकर
नइहे चाउर पिसान
करलइ हे भगवान
बताओं कइसे करे किसान।

पुन्नी के चंदा मोरे गाँव मा - लक्ष्मण मस्तुरिया

चिटिक अँजोरी निर्मल छ्ईहा
गली गली बगराए वो
पुन्नी के चंदा मोरे गाँव मा

अषाढ़ महीना लुका चोरी
खेलत कुदत नाचे
सावन लागे कोन दुल्हिन कस
डोलिया देखे झांके
भादो के महीना झिंगरी महल ले
भादो के महीना झिंगरी महल ले
तैं नैनां चमकाये वो
पुन्नी के चंदा मोरे गाँव मा

कातिक महीना भाई बहिनी कस
रूप तोरे मन भावे
अघहन पूस तोरे महीना ला
बरन बरन कब हारे
कुवाँर महीना झर झर मोती
कुवाँर महीना झर झर मोती
अमृत कस बरसाये वो
पुन्नी के चंदा मोरे गाँव मा

जेठ मांघ म चटक चांदनी
तिरिथ बरस पुन बांटे
जेठ अऊ बैसाख म शीतल
जुड म हवारी लाए
फागुन महीना झमक झमा झम
फागुन महीना झमक झमा झम
रंग गुलाल उडाये वो
पुन्नी के चंदा मोरे गाँव मा

Chhattisgarh: Land Full of Glory

Neeraj Kumar Yadav
M.A. (English) II Sem.

A land full of glory
Full of infinite story
A place Mother Kaushalya's home
Where Lord Ram used to roam
A place where Kalchuri lived long
Every living being sang song
A place called bowl of grain
A place that calms your sane
A place who taught dance to the world
Dance that goes inside your human mold
A place where Kalidasa sat
Writing stories looking at sunset
A place where Veer Narayan fought
A place where wildest animals are caught
A place where Dadariya, Pandvani was born
A place where British flags were torn
I'm proud of my heritage
I love Chhattisgarh, I'm Chhattisgarhia
A land full of glory

Chhattisgarh: A Story

By- Sugandha Saxena (MA English IV Semester)

They say if you condense the whole of India, you will get Chhattisgarh. They are not wrong. Spanning from the rustling valleys of Sonpur hills in the north to the murmuring waters of Indravati river down south, the nature tells but one tale: the tale of the rise of Chhattisgarh.

The story is shaped by historical evolutions from times of antiquity. Famously known as the Dakshina Kosala some three thousand years ago, the land boasts its ties to the Ramayana where Dandak caves are blessed enough to be the abode of and whisper the anecdotes of Lord Ram in his exile. Under the reign of King Mahashivagupta Balarjuna of the Panduvanshi dynasty, Dakshin Kosala flourished like no other. From thriving under the Kalachuris to Haihayavanshis to Nagvanshis and Marathas, Chhattisgarh found itself under the colonial clutches of the British rule. Like the rest of India, the land fought back with many tribal revolts and participated in the first war of Independence with Sonakhan revolt under the leadership of Veer Narayan Singh in 1857. Post-Independence, the demands for autonomy echoed under the quiet rule of Madhya Pradesh. So became Chhattisgarh, the unprecedented 26th state of India, on 1st November 2000 AD.

As such, Chhattisgarh stands as a microcosm of India's plural soul, concentrated, resilient, and deeply humane. However, the culture still has a dominance of the indigenous tribal population. This story of Chhattisgarh is further enriched by the Champa Kosa silk adorned by the women, rice-centric delicacies, the bell metal and wooden crafts of Bastar, and the Panthi, Raut Nacha and Sua folk dances. Not just that, the 75-day-long Bastar Dussehra is the longest festival in the world, fostering community building and preserving tradition. To supplement the already breathtaking aspects of this 26th state, we can call upon the glittery cascades of Chitrakote which is also known as the Niagara Falls of India, the chilly and hilly Mainpat which is the Shimla of Chhattisgarh and the chirping Sal and Teak forests. Tigers and the ebony Bastar Hill Myna find a haven under the guardianship of Achanakmar Tiger reserve and Kanger Valley National Park, respectively.

Standing with a strong contribution to nation building with hosting one of the largest mineral, rice and steel supplies in the country, Chhattisgarh is a serene amalgamation of quiet development coupled with natural environment.

As we celebrate 25 years of Chhattisgarh, it is necessary to pay homage to the struggles that brought this beloved state where it is today and to honor the legacy that we, as a community, are entrusted with.

Chhattisgarh: The Green Heart of India

Harsh Sahu
M.A. 3rd sem. (English Literature

Chhattisgarh, which completed 25 years of its formation, is proudly known as the "Green Heart of India" due to its vast forest cover, rich biodiversity, and deep-rooted relationship between nature and human life. Located in central India, the state is blessed with dense forests that cover nearly 44 % of its geographical area, making forests the backbone of its ecological balance and cultural heritage.

As urbanization, industrial expansion, and mining activities increase across the globe, forests are shrinking at an alarming rate. Chhattisgarh's dense forests act as natural carbon sinks, absorbing carbon dioxide and reducing the impact of global warming. They help regulate temperature, improve air quality, and maintain rainfall patterns—
issues that are central to today's
climate crisis.

Chhattisgarh's forests are rich in biodiversity, supporting a wide variety of plants, animals, and bird species. These forests provide a safe habitat for wildlife and help maintain ecological balance. National parks and wildlife sanctuaries protect this biodiversity and also encourage eco-tourism. Tourists visit these areas to enjoy wildlife, waterfalls, caves, and natural landscapes, which creates employment for local communities. In this way, biodiversity conservation and tourism together promote environmental awareness and sustainable development.

Chhattisgarh's forests are rich in medicinal plants such as Ashwagandha, Giloy,Amla, Harra, and Safed Musli, which are highly relevant in today's world of growing health problems. These plants support immunity, reduce stress, and provide natural treatment options. Preserved by tribal knowledge, they highlight the importance of forest conservation for sustainable and affordable healthcare.

Chhattisgarh: The Green Heart of India

Silver Jubilee, Golden Gaps: Evaluating the Reality of 'Mahtari Shakti' in Chhattisgarh

By: U Somya Reddy
M.A. English IVth Semester

As Chhattisgarh celebrates its Rajat Jayanti (Silvar Jubilee) in 2025, the state stands at a crossroads of remarkable achievement and persistent systemic challenges. Over the last 25 years, the narrative of "Mother Power" has been central to the state's identity, yet a critical look reveals that while the glass ceiling has been cracked, it has not yet been shattered.

The Political Paradox: Representation vs. Power Chhattisgarh presents a unique case in Indian democracy. In the 2023 Assembly polls, women voters actually outnumbered men (1.03 crore women vs. 1.01 crore men). This democratic vitality is reflected in the Legislative Assembly, where women hold over 21% of seats—one of the highest percentages in the country.

However, a critical gap exists in the bureaucratic and judicial echelons:

* The Glass Ceiling: In 25 years, Chhattisgarh has never seen a woman serve as Chief Secretary or Director General of Police (DGP).
* Judicial Imbalance: Of the 15 Chief Justices the High Court has had, none have been women. Currently, female representation in the high court remains negligible.
* The "Pradhan-Pati" Culture: While women lead in local Panchayats,the functional power in rural pockets is often still wielded by male relatives, a phenomenon that the state's empowerment schemes have yet to fully dismantle.

Economic Empowerment: From SHGs to "Lakhpati Didis"
The state's economic backbone, especially in tribal and forested areas, is undeniably female. The Bihan (NRLM) initiative and the Lakhpati Didi program have turned Self-Help Groups (SHGs) into economic engines.

Procurement Leadership: 837 out of 866

Minor Forest Produce (MFP) centers are managed by women.

Wage Disparity: Women in agriculture often work 15-16 hours but receive lower wages than men for the same labor.

Direct Cash Flow: Schemes like Mahtari Vandan Yojana provide .12,000 annually, improving liquidity.

Digital Divide: Tribal women remain largely outside formal digital and financial systems, limiting their entrepreneurial scale.

Entrepreneurship: Rise in "Kosa" textile and bamboo handicraft exports led by women.

Economic Dependence: Despite income, final decision-making on large household assets often remains with males.

Social and Health Indicators: The "Mini Mata"Legacy Chhattisgarh inherits the legacy of Mini Mata, its first female MP and a crusader against social evils. The state boasts a favorable sex ratio (991:1000), significantly higher than the national average.

However, the "Rajat Jayanti" milestone is shadowed by:

* Health Access: In remote Bastar and Surguja, the "distance to delivery" remains a life-threatening factor. While Mukhyamantri Haat-Bazaar Clinic schemes help, maternal mortality in tribal belts remains a concern.

* Safety and Crime: The state has pioneered women-only police stations and the Abhivyakti app. Yet, the social stigma surrounding domestic violence persists, and cases of "Tonhi" (witch-branding) violence, though legally banned, still sporadically surface in rural areas.

Conclusion: Beyond Symbolic Empowerment for Chhattisgarh to truly honor its "Rajat Jayanti," it must move beyond viewing women as "beneficiaries" of schemes and start seeing them as "architects" of policy. The next 25 years must focus on placing women in the Chief Secretary’s chair, the High Court bench, and the boardroom, ensuring that the "Nari Shakti" (Women Power) often praised in speeches is reflected in the state’s actual power structures.

----000---

25 Years of Chhattisgarh: A Journey of Progress, Culture and Heritage

By : Sanjana Soni
MA English IV Sem.

Chhattisgarh was formed on 1 November 2000 as the 26th state of India. In its 25-year journey, the state has shown remarkable progress in social, economic, cultural and administrative spheres while preserving its rich tribal heritage. Known as the "Rice Bowl of India", Chhattisgarh has strengthened agriculture through irrigation projects, farmer-friendly policies, and rural development schemes, improving the livelihood of millions .

Industrially, the state has emerged as a major hub for steel, power , cement and minerals, contributing significantly to national development. Infrastructure has improved with better roads, rail connectivity , educational institutions, and healthcare facilities reaching even remote tribal areas. Democratic governance has matured, reflected in transparent administration and public welfare initiatives.

Tourism is a major strength of Chhattisgarh. Its natural beauty includes waterfalls, forests , caves, and wildlife sanctuaries such as Kanger Valley National Park. Religious and Cultural sites like Bhoramdeo Temple, Rajim (Prayag of Chhattisgarh), Mata Kaushalya Temple, and Sirpur attract devotees
and tourists alike, highlighting the state's spiritual importance.

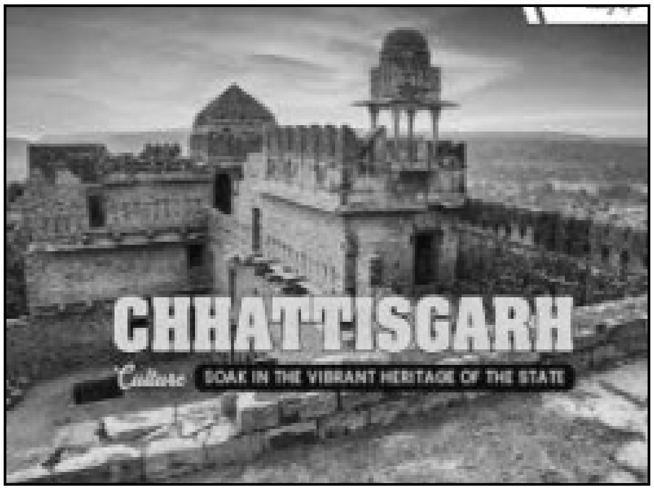

Culturally, Chhattisgarh proudly preserves it's tribal traditions , folk dances, music, handcrafts, and festivals like Bastar Dussehra and Bastar Pandam. These reflect the deep connection between people, nature, and tradition.
"As Chhattisgarh complete 25 years, it stands as a symbol of balanced development -where modern growth walks hand in hand with cultural roots and inclusive progress." Rajat Mahotsav celebrates 25 glorious years of Chhattisgarh journey of growth , Culture, and self-reliance.

From rich tribal heritage to modern development, Chhattisgarh shines as a symbol of unity and progress. The Silver Jubilee honours the spirit of the people and envisions a brighter future for the state.

--000--

Educational Tour to Bastar

Gita Yadu (M.A. 2nd sem.)

The history Department of Government V.Y.T. College Durg (C.G.) has organized an educational tour to Bastar with the purpose of giving students practical exposure to the historical, cultural and geographical heritage of the region. This tour proved to be an enriching experience that combined academic learning with natural exploration.

We started our journey early in the morning with great excitement. The bus journey, itself was full of joy music and laughter. Teacher guided us throughout the trip ad explained the importance of each place we visited. Our first stop was Tatamari, a place know for its scenic beauty and historical relevance. The calm environment and natural surroundings introduced us to the geographical diversity of Bastar. Then we visited the ancient Narayanpal Vishnil Temple, Which stands as a fine example of early temple architecture and reflects the religious traditions fo the region. The next major destination was the famous Chitrakote waterfall after referred to as the 'Niagara of India' The powerfull flow of water and the vast stretch of the river provided as with a clear understanding of river systems, erosion and land forms. After this, we visited Tamda ghumar waterfall, which is distinguished by its copper-colored rocks and peaceful atmosphere. Then we had our trip in the bus itself a lot of fun and enjoyment.

Our tour continued to the historic town of Barsoor, which was once an important center of the Chhindaka Nagavanshi dynasty. Here we visited the Ganesh Temple followed by the Mana Bhanja Temple and the Battisa Temple, These temples display remarkable stone carvings and architectural skill offering insight into the artistic and religious life of ancient Bastar, We then proceeded to the beautiful saat Dhara waterfall, where several small streams merge together to form a captivating natural scene. This place helped us understand the harmony black and white the nature and human life in the bastar region. Our fist day tour came to the end here, then we had our dinner in a hotel and at night we had our stay in the government hostels, separate hostels for both girls and boys. We all created nice memories, talked shared and enjoyed a lot. The next morning, we get ready on time and went to Gama wada, a site of local historical importance that reflects the traditional lifestyle of the people. One of the most significant places of our tour was the revered Danteshwari temple, Dantewada which is one of the 52 shakti peethas of India. The temple holds great religious and cultural importance and represents the deep rooted faith of the tribal communities of Bastar. Then we had our breakfast in the same hotel with a refreshing cup of tea. Finally we visited the breathtaking Tirathgarh water fall, where water flows down in a series of steps, creating a spectacular view, The beauty and grandeur of this waterfall left a casting impression on all of us.

This educational tour to Bastar enhanced our understanding of history culture, religion and geography. It also strengthened discipline, cooperation and unity among students. The tour was truly a valuable learning experience and will always remain unforgettable.

BHORAMDEV TEMPLE

Shruti Soni
M.A. 2nd Semester English

History of Bhoramdev Temple : The Bhoramdev Templ is an ancient Hindu temple located in kabirdham (kawardha) district of chhattisgarh. India It is dedicated to Lord Shiva and is often called the "khajuraha of Chhattisgarh. because of its beautiful stone carvings.

Construction period - The temple war built in the 11th century CE. around 1080-1100-CE, during the rule of the Nagvanchi dynasty. According to inscription & historical sources, the temple was constructed by king Ramchandra of the Nagvanshi dynarty.

Architectural style : Bhoramdev temple is built in the Nagara style of temple architecture, which was common in north India during the medieval period. The temple is made up of sandstone & stands on a high platform. Its structure includes- Garbhagriha (sanctum), Mandapa [pillared hall] shikhara [tower].

The walls of the temple are decorated with intricate sculptures of gods, goddesses, dancers, musicians, animals & mythological scenes. Some carving's alro depict human emotions & daily life, showing the artistic excellence of that period.

The educational tour to Bhoramdev has been memorable and enriching experience for all of us.

We visited the famous Bhoramdev temple, which is often called the Khajuraho of chhattisgarh", because of its beautiful stone carving and ancient architecture surrounded by hill's and forest the peaceful environment made the wisit both refrershing and educational. Our teachers explained the historical importance of the temple, its construction during the kalchuri dynasty. and its cultural significance, which helped us understand history beyond text books.

Traveling with college friends made the tour enjoyable. We shared food, clicked photographs. phs, explored the temple complex together. and discursed what we learned the journey streeng thened our bonding and teamwork. Our teacher teachers guided us throughout the tour, ensuring discipline while also encouraging curiasity and questions. Their explanations made history come alive and easier to remember.

Overall, the Bhoramdev educational tour was a perfect blend of learning, enjoyment and cultural awareness. It enhanced our knowledge of heritage, improved our relationship with friends and teachers and gave us lifelong memories. Such tours are important as they develop practical understanding, unity & respect for our rich historical legacy.

Role of students in Indian National Movement

Nishita Mahar
M.A. II sem. (History)

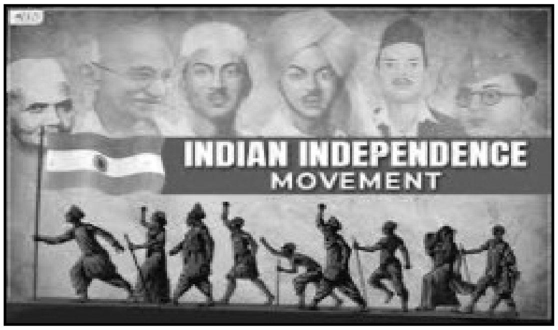

Students played key role to India's national growth and the country struggle for independence. Freedom struggle students contributed significantly to the freedom struggle, either by joining organizations such as the Indian National congress and the "Abhinav Bharat" society or by coming voluntarily, They were arrested and some of them rose to prominence, including Jawaharlal Nehru, Bhagat Singh, Subhas Chandra Bose, Millions were inspired to join the movement by their dedication to social justice, Intellectual powers, and willingness to make sacrificed, students also played an important role in spreading nationalist ideas 2nd increasing awareness.

With the spread of western education in the late nineteenth century, Indian students were exposed to liberal & nationalist ideas. College and universities become centers of political awakening.

For the first time students took part in largenumber in freedom movement when Lord Curzon partitioned Bengal in 1905, the youths were mainly behind the Indian National congress at that time.

When the congress was split in its Lahore session in 1907, the students also distributed between these groups, they sallied around the leadership of Bal Gangadhar Tilak and later an, of Mahatma Gandhi, under the leadership and guidance of Gandhiji. The students became a formidable force in India.

The Swadeshi and Boycott Movement (1905-1908)
Marked the first large - scale participation of students in the freedom struggle. Students Boycotted government educational institutions, picketed shops selling foreign goods and encouraged the use of swadeshi products. National schools and colleges were established to provide education bases on nationalist ideals Sumit Sarkar notes that " the Swadeshi movement saw students emerge as the shock troops of nationalism".

When Gandhiji Launched his campaign against Rowlatt Act (1919) The jallianwala Bagh atrocities in 1919in which the students had taken part in a big number.

During the Non-Cooperation Movement (1920-1922)
Students responded enthusiastically to mahatma Gandhi's cal. Thousands left government run schools and college and joined national institutions such as jamia millia islamia and kashi viadyapeeth. They acted as volunteers, propagating the message of swaraj, nonviolence and self-reliance. Judith Brown observes

that that "students provided the organizational strength and moral fervor to Gandhian mass movements."

- In 1920, the first All-India students conference was held in Nagpur under the president ship of Lala Lajapat Rai. Students could now get the support and guidance of leader like subhas chardra Bose and others.

Students also played a vital role in various campaign launched by Gandhiji against the British such as - the " No tax" campaign 1921, the civil disobedience movement, the dandi satyagraha of 1930 etc.

In the civil Disobedience Movement (1930-1934) students participate in Demonstrations, salt satyagraha and picketing of foreign cloth and liquor shops. Despite arrests, expulsions and police repress in, their involvement remained string. Bipin Chandra highlights that student participation give the movement a militant edge while relaining its mass character.

- In 1936, The All-India students federations, the first student organization India's was born in order to support the Indians National Congress in its struggles.

All India students federation was divided into two factions in 1938 such as the All-Indian Youth congress and All-India students federation (AISF).

The Quit India movement of 1942. Witnessed the most decisive role of students took the initiative in organizing strikes, underground activities and secret communications. R.C. Majumdar states that the youth and students kept the flame of rebellion alive during the leaderless phase of the Quit India movement.'

A few section of the students took to some violent actions to paralyze the British administration by cutting telephone wires, blocking transport routes destroying public property, Disturbing postal, police banking and other services.

- Several student had been imprisoned and faced physical harassment and some of them wire killed in police firings also.

In conclusion, students were not passive supporters but active architects of the Indian national movement As Bipin Chandra rightly remarks, "no mass movement in modern India was complete without the participation of students." Their courage, idealism, and sacrifices significantly contributed to India's Independence.

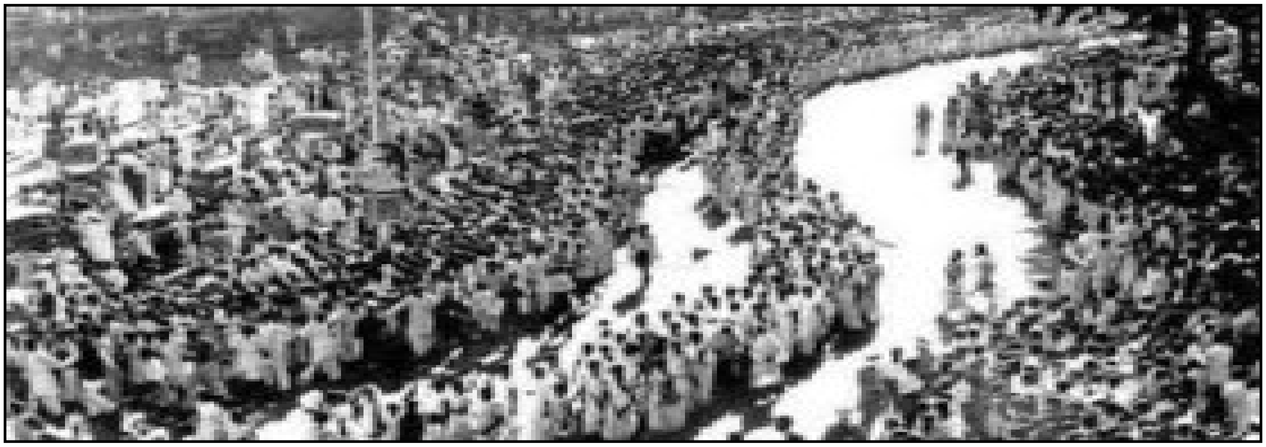

The Story of Kannagi : The Tale of the Anklet

Nishita Mahar
M.A. II sem. (History)

Chilappadhikaram is an ancient Tamil epic written by Ilango Adigal, which is regarded as one of the greatest Tamil epics. It is a tale of love, treachery and injustice.

Puhar was an ancient city somewhere south of India where Kovalan, the son of a rich merchant, lived with his beautiful wife, Kannagi. Everyone who knew them admired them. With a smile that would light up any room, kovalan was handsome and charming man.

One the other hand, Kannagi was virtuous devoted to her husband, loyal & kind. The were content, and in the gilded and jeweled life he led, they had everthing they desired.

So happy people used to say that no couple in this world could go up to Kovalan & Kannagi . The couple lived a life filled with abundance, but what made their lives complete, whole and rich was their mutual love.

Kovalan was as dear to her as she was to him. They lived each day in joy & nothing seemed to come between them.

Kovalan's Betrayal

However, life as we know it is anything but predicable. But then kovalam met a beautiful dancer mamed as Madhavi, whom he decided to be with for a while. Always full of grace & a beauty, Madhavi danced in her colourful showy costume like a mesmerizing peacock.

Kovalan fell for her beautiful allure and fell lin love with her in no time. Having fallen in love worth Madhavi, Kovalan forget the home and hearth he has built with Kannagi.

Now, all oif Kovalan's cash flow started to go toward Madhvi. He gifted her expensive things and treated her lovingly, While Kannagi, though he was at home, was unaware for the betrayal.

The money Kovalan inherited slowly started vanishing after a few days. He had spent all his

time with Madhavi and ended up with zero.

Kovalan's Realization

Once Kovalan recognized his blunder, he was ridden with guild. He had lost everything, both the love of his life Kannagi whom he had betrayed, and now his life savings.

Madhvi was beautiful indeed, but the void in her heart wasn't mend able by that. Deep in his heart, kovalan knew he should go back to Kannagi and apologies.

He returned to Kannagi full of remorse for all he had done. However, Kannagi, an excellent and forgiving wife, took him back.

Although he had committed wrongs against her, Kannagi still loved Kovalan. Forgiving him, she and the resolved to go and from there. A New Beginning in Madurai

With all their wealth gone, Kovalan and Kannagi left Puhar and moved to Maduria, the capital of the Pandya kingdom. They hoped to begin again.

Kannagi gave Kovalan one of her most valuable possessions, a golden anklet decorated with gems. She told to sell it, hoping the money would help them start fresh.

Kovalan went to a jewelers in Madurai to sell the anklet.

But unknown to him, the queen of the Pandya king, Nedunchezhiyan, had recently lost and anklet that looked very similar to Kannagi's.

When the jeweler saw kovalan's anklet, he assumed it was the queen's stolen anklet.

The False Accusation

Without verifying the truth , the jeweler went straight to the king and accused kovalan of stealing the queen's anklet.

The king, without asking any questions or investigating the mother declared that kovalan was guilty.

He ordered kovalan's execution without giving him a chance to defend himself.

The soldiers took kovalem away, any he was killed for a crime he did not commit. This tragic and unjust event left Kannagi heart broken. Her husband had been wrongly accused and killed without a fair trial.

Kannagi's Anger and Grief

When Kanngi heard the news of kovalan's death, she was devastated. The man she had loved and forgiven was gone forever, taken from her by an unjust system.

But kannagi's grief quickly turned into anger. She knew that her husband was innocent and she could not let this terrible injustice go unpunished.

With determination burning in her heart, Kannagi went to the king's court. She stood before the king, holding the other anklet that matched the one

kovalan had tried to sell.

In a voice filled with emotion, she demanded to know why her husband had been killed without a proper investigation.

Kannagi threw the anklet onto the hard floor in front of the king. It broke open, ad rubies scattered across the floor.

The king 4 queen, seeing the rubies, realized their terrible mistake. The queen's anklet had contained pearls, not rubies. Kovalan had been innocent all along.

The king's Regret

The king was overwhelmed with guilt and shame. He had made a horrible mistake one that had cost an innocent man his life.

Unable to bear the weight of his error, the king collapsed in despair. The queen, too was filled with sorrow for the life that had been lost because of their negligence.

Kannagi's Wrath

But Kannagi's anger was not satisfied. Her husband had been wrongfully, executed and she had lost everything.

In her rage and grief, Kannagi cursed the entire city of Madurai. In an act of intense emotion, she tore off one of her breasts and threw it onto the city.

The curse took the form of a great fire, which spread across Madurai, burning the city to the ground.

The people of Madurai trembled in fear, witnessing the power of Kannagi's wrath.

The city, which had wronged her so deeply, was reduced to ashes,

Kannagi Becomes a Goddess

The gods in heaven watched as Kannagi unleashed her fury.

They saw that her cause was just, and her love for Kovalan had been pure and unwavering. Kannagi had stood up for the truth, even great personal cost.

After fulfilling her mission, kannagi ascended to the heavens no longer a mortal woman but a goddess.

She is remembered and worshipped as symbol of strength, justice and virtue.

The Themes of Chilappadhikaram

The story of chilappadhikaram explores essential themes such as justice and loyality. It shows how the innocent can suffer when those in power act carelessly.

Even after his betrayal, Kannagi's devotion to kovalan is a powerful example of love and forgiveness. The story also highlight the concepts of fate & karma. Kovaln's actions have consequences, and justice will eventually prevail.

Legacy of kannagi

Kannagi's story has left a basting impact on Tamil culture. She is worshipped as a goddess in parts of Tamilnadu and Srilanka and her tale continues to inspire literature, art and theatre.

A status of kannagi stands in Chennai, representing virtue justice, and the power of a woman's love.

The epic of Chilappadhikarm is not just a tragic love story. It is a reminder of the importance of standing up for truth and justice, even in the face of significant personal loss.

Chaattisgarh - Silver Jubilee

Aditi Singh
Chemisty Deptt.

On completion of 25 golden years of statehood, government of Chhattisgarh announced 2025 as" Chhattisgarh silver jubilee year" and is being celebrated from 15 August 2025 to 6 February 2026. The Theme as announced by state government was "Poor Youth food provider and women centric public participation". Every year on 1st Novermber, government celebration the day as "state foundation day" as the part comprising of 16 chhattisgarhi and speaking districts from parent state was splitted by madhya Pradesh state Reorganization act 2000. Apart form this vidhan sabha foundation Day is also celebrated on 14 December and mark its silver jubilee year.

On this auspicious occasion, Government of Chhhattisgarh and department of culture of celebrated in unique manner by announcing 25 years-25 weeks celebration which show its commitment two wadrs self reliant, self-sufficient and Viksit Chhattisgarh. The Government of India and Chhattisgarh govt. designed a web portal" Chhattisgarh Raja Ajanta Portal to collect & showcase the various development & milestones achieved by state. It is compilation of programs achievements promoters public partition and monitor statewide events.

Chhattisgarh. 9th largest state by area with population around 30 million is one of the fastest developing states, Ruled by Kalchuries for nearly 700 years, it developed through various phases. Sets Line Bhoramdeo, Sitabengra caves, Bhima kichak temples holds their archeological importance. In transportation total of 20 National Highway connects regions measuring 3078 km. Also, south East Central Railway Zone of Indian Railways had its headquarters at Bilaspur Also 85% of tracks an electrified.

As of 2025-26, GOP growth stood at 8%. Since 2020-21 worth around 6.359 lakh crore, with recorded growth rate of 11.2% in 2023-24 Advancement of Industry and service sector stood at 32% and 36%, respectively. "Rice Bowl of India" produces medicinal rice and among top quality food products across globe. for immunity.

In power sector, National thermal power corporation, Sipat and LARA copper thermal power station and major step two wards clean and green energy initiative providing more than 2,000 MW. Coal boiler Like Gevra, Dipka, Jhilmili, Sohnat are major source of power generation in state Chhattisgarh accounted for 13.1% of total value of mineral production in India.

Chhattisgarh is total export1 worth doller

of 2.19 billion in PY25 showing significant growth from previous It shows increased yean compound Annual Growth Rate (CAGR) of 10.92% from PY 16 to PY 26

It possess cultural diversity which vary from region to regions showing variety of dances like Pandvani, Raut Nacha, Suwa Nacha to festival like. Bastar dussherra, Rajim Kumbh Mela, Nara Narayan mela. Many arts like Bastar Dhokra, wooden craft, Iron craft and products like Jeeraphool rice, Nagri Dubraj, champa silk sarees fabrics are recognized globally through Geographical Indication (GI) tags.

Also, state showed steam rive is sports range of participation from organizing Bartar Olympics and including wide rang of games and events for health and finess, over 3.8 lakh participats showcased their skills 2025 olympics. Operation "Black forest", a combined militany of centre and state planned to make Maoist free state till March 31, 2026. Till date nearly 5,000 left extremist wing members surrender & provided rehabilitation under "loan vasantee" initiatives.

At a nutshell, Chhattisgarh is making new horizons of development whether it is in 20% decrease in unemployed of steep growth of economy, state is developing in every sphere.

---000----

मेरा सपना छत्तीसगढ़ को एक उन्नत राज्य के रूप में साकार होते देखना है ।

- डॉ. खूबचन्द बघेल

Chhattisgarh at 25: A Silver Jubilee of Identity, Heritage, and the Sacred Legacy of Lord Rama

Dr. Rajshree Naidu
Assistant Professor (Guest faculty)
Department of English

The completion of twenty-five years of Chhattisgarh as a separate state marks a significant milestone in the journey of a land deeply enriched with history, culture, spirituality, and natural abundance. Formed on 1 November 2000, Chhattisgarh emerged with a distinct identity-one shaped by tribal wisdom, ancient traditions, and a profound mythological legacy that links it inseparably to the epic Ramayana.

As Chhattisgarh celebrates its Silver Jubilee, it is not merely a commemoration of administrative progress but a tribute to a civilisation that has nurtured faith, resilience, and harmony for centuries.

A Land Sanctified by Mythology

Among the most revered and cherished beliefs associated with Chhattisgarh is its recognition as the maternal home (Nanihaal) of Lord Rama. According to popular tradition and regional folklore, Mata Kaushalya, the mother of Lord Rama, is believed to have originated from the region of present-day Chhattisgarh. This sacred association elevates the state's cultural stature and places it at the heart of India's spiritual geography. Sites such as Chandkhuri, near Raipur-believed to be the birthplace of Mata Kaushalya-stand as living testaments to this mythological connection. The state is also richly dotted with Ramayana-

related locations like Sitamarhi-Harchauka, Ramgarh, Shivrinarayan, Turturiya, and Jagdalpur, collectively forming what is often referred to as the Ram Van Gaman Path. These places are not merely historical markers but centers of living faith, pilgrimage, and cultural continuity.

Cultural Continuity and Spiritual Identity

The Ramayana's influence on Chhattisgarh extends beyond geography into its folk traditions, festivals, music, and theatre. Performative art forms such as Ramleela, Panthi dance, and tribal storytelling traditions reflect the moral values and spiritual ethos embodied by Lord Rama. For the people of Chhattisgarh, Rama is not a distant deity but a familial presence-honoured as a son-in-law of the soil.

This deep-rooted spiritual connection has shaped the state's ethos of simplicity, righteousness, and coexistence, values that continue to guide its social and cultural life even in the modern era.

Progress Rooted in Tradition

Over the past twenty-five years, Chhattisgarh has made notable strides in education, infrastructure, agriculture, tribal welfare, and industrial development. While embracing modernization, the state has remained firmly anchored in its cultural roots. This balance between progress and preservation is perhaps Chhattisgarh's greatest strength.

Initiatives to promote heritage tourism, tribal art, local languages, and spiritual circuits reflect a conscious effort to honour the past while shaping a sustainable future.

A Silver Jubilee with a Golden Legacy

The Silver Jubilee of Chhattisgarh is thus a celebration of identity, endurance, and sacred heritage. The belief in Chhattisgarh as Lord Rama's maternal home adds a divine dimension to the state's narrative, transforming its journey from a political formation into a civilizational continuum.

As Chhattisgarh steps confidently into its next chapter, it does so carrying the blessings of its mythological past and the promise of a progressive future-guided by the timeless ideals of dharma, compassion, and unity symbolised by Lord Rama himself.

विगत पचीस वर्षो में विकास के पथ पर अग्रसर हिन्दी विभाग

डॉ. अभिनेष सुराना
विभागाध्यक्ष हिन्दी

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं बल्कि समाज की आत्मा का स्वर होती है। इसी भाव को केंद्र में रखकर हिंदी विभाग में शिक्षण, शोध और साहित्यिक चेतना के विकास में उल्लेखनीय योगदान हिंदी विभाग आरंभ से दे रहा है। विद्यार्थियों में ज्ञान, संस्कृति और संवेदना का विकास कर सजग नागरिक भी बना रहा है । 1958 में स्थापित महाविद्यालय और 1972 में स्थापित स्नातकोत्तर हिंदी विभाग अपने सीमित संसाधनों के साथ शिक्षकों के समर्पण एवं दृढ़ संकल्प के बल पर छत्तीसगढ़ की एक सशक्त शैक्षणिक इकाई के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। अनेक विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की प्राविण्य सूची में स्थान प्राप्त कर विभाग का नाम गौरवान्वित किया है । विभाग के अनेक विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा में सफलता हासिल कर विभाग की शैक्षणिक गुणवत्ता को प्रदर्शित किया है ।

संकाय सदस्यों ने शोध लेखन पुस्तकों की रचना, संपादन के माध्यम से साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हैं । राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता, शोध पत्रों का प्रकाशन तथा पुस्तकों का संपादन विभाग की अकादमी सक्रियता के प्रमाण हैं । सत्र 2023-24 में विभाग द्वारा लोकनाचा लोकनाट्य का सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन कर विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना भी जगाया है । समय-समय पर कविता कार्यशाला के माध्यम से साहित्यिक वातावरण को जीवंत बनाए रखने तथा युवा कवियों को अवसर भी प्रदान किया है। हिंदी दिवस, मातृभाषा दिवस, काव्य पाठ, निबंध, प्रतियोगिता तथा संगोष्ठियों के माध्यम से विद्यार्थियों में भाषा संवेदनशीलता और सांस्कृतिक चेतना का विकास भी किया है। विभाग द्वारा प्रख्यात साहित्यकारों आलोचकों के व्याख्यानों का आयोजन कर विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष संवाद का अवसर प्रदान किया जाता है। विद्यार्थियों को सृजनात्मक कार्य की

सतत् प्रेरणा भी देते रहे हैं। समय-समय पर हिन्दी विभाग द्वारा, cspdcl भारतीय साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं छ.ग. साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन कर विद्यर्थियों को लाभान्वित करने का सतत् प्रयास कर रहा है। विभाग में अब तक लगभग 50 विद्यार्थियों ने शोध उपाधि प्राप्त किया हैं एवं वर्तमान में 26 शोधार्थी शोधरत हैं।

विगत 25 वर्षों में महाविद्यालय के विद्यार्थी विभिन्न शासकीय एवं प्राइवेट संस्थाओं में कार्यरत हैं । शैक्षणिक भ्रमण कर विद्यार्थियों को अपने आसपास के क्षेत्र का ज्ञान भी लगातार कराते आये है एवं विभिन्न विभाग में शिक्षा को समाज से जोड़ने का सतत प्रयास किया है। हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु विद्यालयों एवं अन्य संस्थाओं में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए जिससे भाषा के प्रति सम्मान और अपनत्व की भावना भी सुदृढ़ हुई ।

वर्तमान समय अनुसार विभाग में डिजिटल शिक्षण पद्धति को अपना कर ऑनलाइन व्याख्यान वेबीनार की सामग्री तथा स्मार्ट कक्षाओं के माध्यम से अध्यापन को आधुनिक स्वरूप प्रदान कर विद्यार्थियों को नवीन ज्ञान संसाधनों से जुड़ने का अवसर भी प्रदान किया जा रहा है ।

बीज से वटवृक्ष तक प्रकाश की राह पर : भौतिक शास्त्र विभाग के 25 वर्षों की प्रेरक यात्रा

डॉ अभिषेक कुमार मिश्रा,
सहायक प्राध्यापक (भौतिक शास्त्र विभाग)

शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास का आधार होती है और विज्ञान शिक्षा का विशेष महत्व रहता है। भौतिक शास्त्र वह विषय है जो प्रकृति के मूल नियमों को समझने, तर्कसंगत सोच विकसित करने तथा तकनीकी प्रगति को दिशा देने में सहायक होता है। शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर महाविद्यालय, दुर्ग का भौतिक शास्त्र विभाग विगत 25 वर्षों से इसी उद्देश्य को लेकर निरंतर कार्यरत है। इस विभाग ने अपनी स्थापना से लेकर आज तक शैक्षणिक उत्कृष्टता, शोध, प्रयोगात्मक विकास, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं।

भौतिक शास्त्र विभाग की स्थापना महाविद्यालय में विज्ञान शिक्षा को सुदृढ़ करने तथा विद्यार्थियों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अवगत करने के उद्देश्य से की गई थी। विभाग की स्थापना 1958 में हुई थी और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम 1965 में शुरू किया गया था। प्रारंभिक वर्षों में सीमित संसाधनों के बावजूद विभाग ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षण को अपनी प्राथमिकता बनाया। विभाग का मुख्य लक्ष्य केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में तार्किक क्षमता, समस्या-समाधान कौशल, रोजगार आधारित शिक्षा, नवीनतम प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा और अनुसंधान की प्रवृत्ति विकसित करना रहा है। विगत25 वर्षों में भौतिक शास्त्र विभाग का शैक्षणिक प्रदर्शन अत्यंत सराहनीय रहा है। स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम निरंतर उत्कृष्ट रहा है। प्रत्येक सत्र में बड़ी संख्या में विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर महाविद्यालय का नाम रोशन करते रहे हैं। अनेक विद्यार्थियों ने महाविद्यालयमें सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए तामस्कर अवार्ड प्राप्त किया है, जो विभाग की शिक्षण गुणवत्ता का प्रमाण है। वर्ष 2015 में कुमारी सुनीता देवांगन, वर्ष 2016 में कुमारी नीलिमा, वर्ष 2017 में श्री धनेश बंजारे, वर्ष 2018 में श्री मुकेश कुमार और वर्ष 2026 में कुमारी उपासना दिल्लीवार ने तामस्कर गोल्ड मैडल प्राप्त करने का गौरव हासिल किया।

विभाग द्वारा समय-समय पर यूनिट टेस्ट, सेमिनार, प्रेज़ेंटेशन और आंतरिक मूल्यांकन के माध्यम से विद्यार्थियों की निरंतर प्रगति पर ध्यान दिया जाता है । कमजोर विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त कक्षाएँ, रिमेडियल शिक्षण एवं व्यक्तिगत मार्गदर्शन की व्यवस्था की गई, जिससे सभी छात्रों को समान अवसर प्राप्त हो सके। विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा एवं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं, नेट /सेट प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी विभाग द्वारा कराई जाती है जिसके परिणाम स्वरुप भौतिक शास्त्र विभाग के 200 से अधिक विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। 30 से अधिक विद्यार्थियों ने नेट/जे आरअफ परीक्षा, 20 से अधिक SET & GATE परीक्षाउत्तीर्ण कर चुके है। डी. सुब्रमण्यम वैज्ञानिक ग्रेड-बी इसरो, एस.एस. संसोवा एसआर. वैज्ञानिक इसरो अहमदाबाद, शिल्पा साहू और संदीप कुमार डीएसपी (छ.ग. शासन), डॉ सीतेश्वरी चंद्राकर सहायक, प्राध्यापक शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर महाविद्यालय, दुर्ग, डॉ सोमलता साहू सहायक प्राध्यापक डॉ. खूबचंद

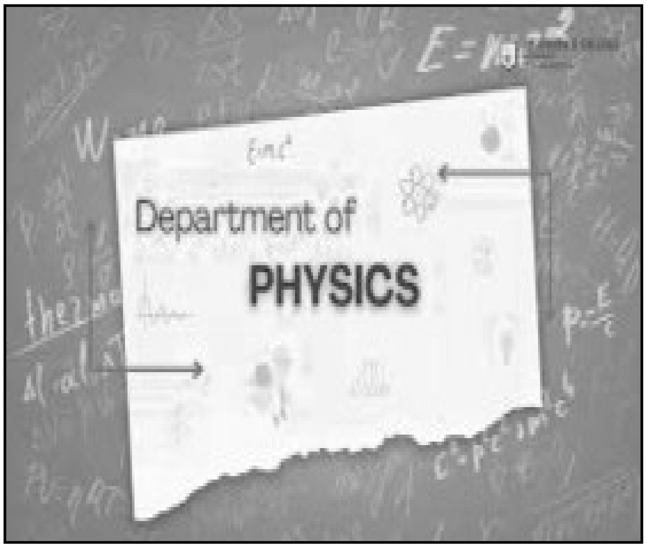

बघेल शासकीय पीजी कॉलेज भिलाई 3, डॉ विकास दुबे सह-प्राध्यापक उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय (NEHU) शिलांग, मेघालय, डॉ राजेश लालवानी रजिस्ट्रार, शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय बस्तर, राहुल शर्मा और शाहीन भारतीय स्टेट बैंक (SBI) में प्रोबेशनरी ऑफिसर (PO), धनेश बंजारे, भारती गायकवाड़, लेखा प्रसाद, मोहित वर्मा, डॉ. ऋतू श्रीवास्तव, आरती वर्मा, डॉ संजय परगनिहा समेत 17 से अधिक पूर्व विद्यार्थियों ने छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (CGPSC) छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित सहायक प्राध्यापक परीक्षा में सफल होकर छत्तीसगढ़ के विभिन्न महाविद्यालयों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। वर्ष 2026 में कुमारी सुस्मिता टोंडरे डिप्टी कलेक्टर, श्री संदीप कुमार डी एस पी और श्री प्रिंस कुमार कुशवाहा एक्साइज इंस्पेक्टर के पद पर चयनित होकर विभाग का नाम रोशन कर रहे हैं। अनेक छात्र-छात्राएँ देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में Ph.D. जैसे उच्च अध्ययन कर रहे हैं। विभाग के पूर्व छात्र आज विभिन्न क्षेत्रों में विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं, तो कोई वैज्ञानिक, शोधार्थी, इंजीनियर अथवा प्रशासनिक सेवाओं में अपनी भूमिका निभा रहा हैं। ये सभी विभाग की शैक्षणिक परंपरा और सफलता की जीवंत मिसाल हैं।

भौतिक शास्त्र जैसे विषय में प्रयोगात्मक शिक्षण का विशेष महत्व होता है। विभाग ने इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रयोगशाला विकास पर निरंतर ध्यान दिया है। विगत 25 वर्षों में प्रयोगशालाओं को क्रमशः आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित किया गया है। ऑप्टिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स, सॉलिड स्टेट फिज़िक्स, न्यूक्लियर फिज़िक्स एवं सामान्य भौतिकी से संबंधित प्रयोगों के लिए आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराए गए हैं। डिजिटल मीटर, कैथोड रे ऑस्सिलोस्कोप (CRO), स्पेक्ट्रोमीटर, पावर सप्लाई एवं अन्य आधुनिक यंत्रों के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जाता है। प्रयोगशालाओं में सुरक्षा, स्वच्छता एवं अनुशासन पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे विद्यार्थी सुरक्षित एवं प्रभावी रूप से प्रयोग कर सकें। इसके साथ ही साथ जिन प्रश्नपत्र से सम्बंधित प्रयोग में बहुत महंगे उपकरण प्रयुक्त होते हैं उन्हें वर्चुअल लैब के माध्यम से सिखाया जाता है जिससे विद्यार्थी लाभान्वित हो सके।

फैकल्टी की शैक्षणिक एवं शोध उपलब्धियाँ

भौतिक शास्त्र विभाग की सफलता में विभागीय प्राध्यापकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। विभाग के प्राध्यापकों ने न केवल उत्कृष्ट शिक्षण कार्य किया, बल्कि शोध एवं अकादमिक गतिविधियों में भी सक्रिय योगदान दिया है। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोध पत्रों का प्रकाशन, सेमिनारों, संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं में सहभागिता विभाग की बौद्धिक समृद्धि को दर्शाती है। शिक्षकों ने फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (FDP), ओरिएंटेशन एवं रिफ्रेशर कोर्स में भाग लेकर अपने ज्ञान एवं कौशल को अद्यतन रखा। NAAC, IQAC एवं गुणवत्ता आश्वासन से संबंधित गतिविधियों में भी विभाग का योगदान सराहनीय रहा है। विभाग द्वारा विद्यार्थियों में शोध एवं नवाचार की भावना को प्रोत्साहित किया गया है। स्नातक स्तर पर परियोजना कार्य, मॉडल निर्माण एवं विषयगत प्रस्तुतियों के माध्यम से छात्रों में अनुसंधान की रुचि विकसित की गई। विद्यार्थियों को वैज्ञानिक समस्याओं पर सोचने, प्रयोग करने और निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित किया गया। यह प्रयास न केवल अकादमिक दृष्टि से उपयोगी सिद्ध हुए, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास एवं रचनात्मकता का भी विकास हुआ। भौतिक शास्त्र विभाग पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर और हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग का शोध केंद्र रहा है जिसमे 15 से अधिक शोध विद्यार्थी पी. एच-डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं और 15 विद्यार्थी शोध कार्य कर रहे हैं। विभाग के प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों द्वारा उच्च इम्पैक्ट फैक्टर के शोध जर्नल में 100 से अधिक स्कोपस आधारित शोध पत्रों का प्रकाशन किया है जिसमे जर्नल ऑफ ल्यूमिनेसेंस,

जर्नल ऑफ मॉलिक्यूलर लिक्विड, लिक्विड क्रिस्टल, रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री, डिस्पर्शन साइंस एंड टेक्नोलॉजी, मटेरियल एक्सप्रेस, ऑप्टिक, एनालिटिकल केमिस्ट्री लेटर्स, ऑप्टिकल मटेरियल, करंट एप्लाइड फिजिक्स, जर्नल ऑफ फिजिक्स एंड केमिस्ट्री ऑफ लिक्विड्स प्रमुख है। भौतिक शास्त्र विभाग द्वारा 8 पेटेंट प्राप्त किये गए हैं और प्राध्यपकों द्वारा 10 से अधिक पुस्तके / पुस्तको में चैप्टर प्रकाशित किये गए हैं। विगत वर्षो में विभाग द्वारा 5 अंतराष्ट्रीय सम्मलेन 7 राष्ट्रीय सम्मलेन और इसके साथ ही साथ समय-समय पर विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए अतिथि व्याख्यान, हैंडस ऑन ट्रेनिंग, इंटेलेक्रचुअल प्रॉपर्टी राईट (बौद्धिक सम्पदा अधिकार) पर व्याख्यान कराये जाते हैं जिससे विद्यार्थियों को भविष्य में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रहती हैं। भौतिक शास्त्र विभाग की प्राध्यापक डॉ. जगजीत कौर सलूजा को यूजीसी नई दिल्ली, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली, छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद रायपुर से उत्कृष्ट शोध के लिए परियोजनाए प्राप्त हो चुकी है। वर्ष 2024 में भौतिक शास्त्र विभाग को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली द्वारा डीएसटी-एफआईएसटी के अंतर्गत 1.25 करोड़ रुपये की परियोजना विभागाध्यक्ष डॉ. जगजीत कौर सलूजा के नेतृत्व में प्राप्त हुयी। मिलिट्री यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, पोलैंड, घेंट यूनिवर्सिटी, बेल्जियम, यूनिवर्सिटी डूलिटोरल, डेनमार्क, फ्रांस, यूनिवर्सिटी ऑफ फ्री स्टेट, दक्षिण अफ्रीका, जियामुसी यूनिवर्सिटी, चीन के साथ शोध पत्र प्रकाशित हुए है।

सहशैक्षणिक एवं विस्तार गतिविधियाँ : भौतिक शास्त्र विभाग ने सहशैक्षणिक एवं विस्तार गतिविधियों पर भी विशेष ध्यान दिया है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, विज्ञान प्रदर्शनी, क्विज़ प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता एवं मॉडल प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए गए। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, टीमवर्क और नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ। विभाग द्वारा समाज में विज्ञान के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिससे विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाया जा सके। स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों के द्वारा डॉट मैट्रिक्स डिस्प्ले, एलपीजी गैस सेंसर, आर्डिनो बोर्ड, आई आर बेस्ड सिक्योरिटी सिस्टम, डिजिटल डस्टबिन बनाये गए जिनका प्रदर्शन समय समय पर विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षा विभाग के अधिकारियो के सम्मुख प्रस्तुत किया गया जिसकी सभी ने प्रशंसा कर इन विद्यार्थीयों का उत्साहवर्धन किया।

आधुनिक शिक्षण पद्धतियों को अपनाते हुए विभाग ने सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग किया है। स्मार्ट कक्षाएँ, पावर पॉइंट प्रस्तुतियाँ, वीडियो लेक्चर एवं ऑनलाइन अध्ययन सामग्री के माध्यम से शिक्षण को अधिक रोचक एवं प्रभावी बनाया गया। डिजिटल संसाधनों के उपयोग से विद्यार्थियों को वैश्विक ज्ञान से जोड़ने का प्रयास किया गया। महाविद्यालय के NAAC मूल्यांकन एवं गुणवत्ता सुधार प्रक्रिया में भौतिक शास्त्र विभाग की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। दस्तावेजीकरण, छात्र फीडबैक, बेस्ट प्रैक्टिसेज़ एवं सतत् सुधार की दिशा में विभाग ने सक्रिय सहभागिता निभाई। इससे महाविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता को सुदृढ़ करने में सहायता मिली। भौतिक शास्त्र विभाग ने विद्यार्थियों में केवल वैज्ञानिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिक मूल्य, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित की है। विद्यार्थियों को राष्ट्रीय चेतना, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक किया गया।

भविष्य की योजनाएँ एवं निष्कर्ष : अपने 25 वर्षो की गौरवपूर्ण यात्रा के उपरांत भौतिक शास्त्र विभाग भविष्य में और अधिक प्रगति के लिए संकल्पित है। शोध गतिविधियों का विस्तार, आधुनिक एवं स्मार्ट प्रयोगशालाओं का विकास तथा उद्योग-अकादमिक सहयोग जैसी योजनाएँ विभाग की भावी दिशा को दर्शाती हैं। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर महाविद्यालय, दुर्ग का भौतिक शास्त्र विभाग अपने 25 वर्षो की यात्रा में शैक्षणिक उत्कृष्टता, शोध, नवाचार एवं सामाजिक योगदान के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कर चुका है। यह विभाग भविष्य में भी विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ छुयेगा- यही हमारी हार्दिक शुभकामना है।

सन्दर्भश्रोत : शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर महाविद्यालय, दुर्ग की वेबसाइटhttps://www.govtsciencecollege-durg.ac.in/

----000----

नवाचार के साथ रसायन विभाग

डॉ. अनुपमा कश्यप
प्राध्यापक (रसायन)

संसार में निहित सूक्ष्म कणों से लेकर औद्योगिक विकास के विशाल गगन में, छत्तीससगढ़ की 25 वर्षो की विकास यात्रा के साथ साइंस कॉलेज, दुर्ग के रसायन विभाग का योगदान अतुलनीय है। जो हि हमारे विभाग की बौद्धिक एवं वैज्ञानिक आत्मानिर्भरता को प्रतिबिम्बत करता है। इस विभाग ने अनुसंधान व अन्य क्षेत्रों में विशेष कीर्तिमान स्थापित किये हैं। पारंरिक शिक्षा से आगे आधुनिक शोध, हरित रसायन, नैनो तकनीक एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यह सतत कार्यरत है।

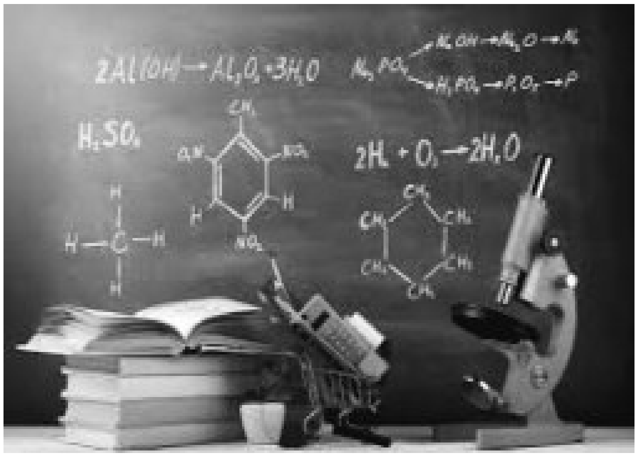

अकादमिक उत्कृष्टता के अन्तर्गत इस विभाग ने कुशल रसायनों के निर्माण के साथ विभिन्न क्षेत्रों में जैसे पुलिस विभाग, शिक्षा, फोरेंसिक, पर्यावरण विभाग, विज्ञान एवं तकनीक आदि के लिये अपने विद्यार्थियों को गढ़ा है, जहाँ ये सफल रूप से कार्य कर इस महाविद्यालय की शोभा बढ़ा रहे हैं, इनमें कुछ नाम है सुश्री सुषमा सिंह (2022-23) पुलिस विभाग. योगेन्द्र साहू (2017-18) पुलिस विभाग, महेन्द्र साहू (नायब तहसीलदार), वेदांश (2020) (उद्योगपति) ऐसे बहुत से छात्र-छात्रायें । यहाँ औषधीय वनस्पति के रासायनिक विश्लेषण और सार्थक उपयोग पर शोध के साथ नैनो तकनीक पर बहुत अधिक कार्य हुआ है। इस क्षेत्र में डॉ. अजय कुमार सिंह (वर्तमान में प्राचार्य) का विशेष योगदान रहा है।

छत्तीसगढ़ के उत्कृष्ट लैब में से एक लैब सेंट्रल इंस्ट्रमेटल, लैब इस विभाग में स्थापित है। जहाँ उच्चकोटि के उपकरणों का उपयोग रासायनिक विश्लेषण हेतु किया जाता है। नवाचार के अन्तर्गत यहाँ पेपर से बायो डिग्रेडबल पेन (बीज सहित) बनाने का प्रशिक्षण एम.एस-सी. के विद्यार्थियों को दिया गया साथ प्लास्टिक पेन जो खराब हो चुके हैं उनका प्रबंधन किया जाता है जिससे पर्यावरण संरक्षण हो सके ।गणेश जी की मिट्टी की मूर्ति बनाने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है ताकि जन-समुदाय प्लास्टरऑफ पेरिस जैसे पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वाले पदार्थ का उपयोग न करे । हर वर्ष गाँव की किसी शाला में जाकर वहाँ के विद्यार्थी एवं ग्रामवासियों को बेटी -बचाओं, नशामुक्ति, स्वच्छता, पर्यावरण-सुरक्षा के प्रति , रसायन विभाग के प्राध्यापक व छात्र-छात्राये जागरुक करते हैं, इस प्रकार समाज में यह विभाग अपना योगदान दे रहा है ।

रसायन-विभाग का लक्ष्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं बल्कि छत्तीसगढ़ को ऐसा कैमिकल हब बनाना है जहाँ नवाचार उद्यमिता एवं वैज्ञानिक चेतना का संगम हो । यह विभाग भविष्य के लिये स्वर्णिम रोड-मैप तैयार कर रहा है।

---000---

गणित विभाग की पिछले पचीस वर्ष की उपलब्धियाँ

डॉ पद्मावती (विभागाध्यक्ष गणित)

शासकीय विश्‍वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय के गणित विभाद्ब की स्थापना वर्ष 1958 में की गई थी। स्थापना काल से ही विभाग का उद्देश्य क्षेत्र के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण एवं मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करना रहा है। विभाग विद्यार्थियों को नवीनतम ज्ञान और जानकारी उपलब्ध कराकर उन्हें एक जागरूक एवं जिम्मेदार नागरिक बनाने का प्रयास करता है, ताकि वे राष्टीय तथा वैश्विक समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बन सकें। गणित केवल आर्थिक क्षेत्र ही नहीं बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विभाग में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की शुरुआत वर्ष 1968 में की गई। इसके बाद वर्ष 1989 में स्नातकोत्तर स्तर पर स्वायत्त पाठ्यत्रम को अपनाया गया। आगे बढ़ते हुए वर्ष 2006 में स्नातक स्तर पर भी स्वायत्त पाठ्यत्रम लागू किया गया तथा उसी वर्ष स्नातकोत्तर पाठ्यत्रमों में सेमेस्टर प्रणाली भी प्रारंभ की गई।

वर्ष 2003 में विभाग को शोध केंद्र के रूप में स्थापित किया गया। विभाग में सुसज्जित एवं सुविधायुक्त शोध केंद्र (Research Centre) उपलब्ध है, जिसमें डी.आर.सी. (DRC) तथा मार्गदर्शक (Guide) की सुविधा प्रदान की गई है। अब तक 12 शोधार्थियों ने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके है, 7 शोधार्थियों ने अपना शोध प्रबंध (थीसिस) जमा कर दिया है तथा 6 शोधार्थी वर्तमान में शोध कार्य कर रहे हैं। विभाग के प्राध्यापकों द्वारा लगभग 250 शोध पत्र विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित किए जा चुके हैं। विभाग को केंद्र सरकार द्वारा एक याचिका (patent) भी प्राप्त हुई है

विभाग के लगभग 20 विद्यार्थियों ने विभिन्न आई.आई.टी. संस्थानों में आयोजित Mathematics Training and Talent Search Programme (MTTS / Mini MTTS) में भाग लिया है, यह कार्यक्रम TIFR मुंबई एवं IIT मुंबई द्वार प्रयोजित किया जाता है जो विभाग के लिए गर्व की बात है। पिछले 18 वर्षो से विभाग द्वारा 'गणित सुमन' नामक वार्षिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। गणित वैज्ञानिक अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण आधार है, इसलिए ऐसी पत्रिका का प्रकाशन विद्यार्थियों में निरंतर शैक्षणिक जागरूकता उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होता है। विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के जन्मदिवस (22 दिसम्बर) के अवसर पर राषट्रीय गणित दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, जैसे - गणितीय क्षमता परीक्षा, गणितीय विषयों पर पोस्टर प्रतियोगिता तथा गणितीय विषयों पर भाषण प्रतियोगिता। यह कार्यक्रम CGCOST द्वार प्रयोजित होता है।

विभाग में डॉ. राधाकृष्णन पुस्तकालय (जिसका उद्घाटन 05 सितम्बर 2005 को हुआ) भी संचालित हो रहा है। यह पुस्तकालय अत्यंत प्रभावी, उपयोगी एवं प्रेरणादायक है। इस पुस्तकालय के लिए निधि प्रत्येक वर्ष स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के सहयोग से एकत्रित की जाती है। इस पुस्तकालय में सामान्य अध्ययन, सामान्य ज्ञान, समसामयिक घटनाएँ, गणितीय तर्कशक्ति, भाषा आदि से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों का संग्रह उपलब्ध है। इसका संचलन विधार्थीयों द्वारा ही किया जाता है ।

विभाग के प्राध्यापक एवं अतिथि प्राध्यापक प्रत्येक वर्ष पीजी विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए NET / SET / PSC की तैयारी हेतु विशेष कक्षाओं का संचालन करते हैं। इनमें लगभाग 33 विद्यार्थी सफल रहे।

विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष शैक्षणिक भ्रमण (Educational Tour) का आयोजन भी किया जाता है, जिसमें विद्यार्थियों को विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, इलाहाबाद विश्‍वविद्यालय, आंध्र विश्‍वविद्यालय विशाखापट्टनम, जादवपुर विश्वविद्यालय कोलकाता, केन्द्रीय

विश्वविद्यालय हैदराबाद आदि का भ्रमण कराया जाता है। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस भी उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। इस अवसर पर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता, कविता पाठ आदि विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, जिसमें स्नातक एवं स्नातकोत्तर वर्ग की सभी छात्राएँ उत्साहपूर्वक भाग लेती हैं।

गणित विभाग द्वारा वर्ष 2014 से उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए गणित ओलंपियाड की कार्यशालाएँ एवं परीक्षाएँ नियमित रूप से आयोजित की जा रही हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य विद्यार्थियों में गणित के प्रति रुचि विकसित ....

सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग

डा. प्रज्ञा कुलकर्णी,
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग शिक्षण, अनुसंधान एवं सेवा में दो दशकों की उत्कृष्टताः गौरवशाली अतीत एवं उपलब्धियाँ (2005-2025)

'कक्षा से परे - कौशल, विज्ञान और समाज का निर्माण'

शैक्षणिक सत्र 2005-2006 में एक स्ववित्त पोषित इकाई के रूप में प्रारंभ हुआ सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग आज शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान नवाचार और सामाजिक सहभागिता का सशक्त प्रतीक बन चुका है। बीते दो दशकों में इस विभाग ने न केवल सूक्ष्म जीवों की वैज्ञानिक समझ विकसित की, बल्कि उस ज्ञान को समाज के हित में उपयोग करने की एक सशक्त परंपरा भी स्थापित की है।

प्रारंभिक वर्षों में सीमित संसाधनों के बावजूद विभाग अब बी.एससी., एम.एससी. एवं पीएच.डी. कार्यक्रमों का सफल संचालन कर रहा है। पिछले 20 वर्षों में विभाग ने लगातार शैक्षणिक मजबूती दिखाई है और उद्योग की आवश्यकताओं तथा नवीनतम वैज्ञानिक रुझानों के अनुरूप पाठ्यक्रमों का निरंतर अद्यतन किया है। सिलेबस निर्धारण बोर्ड (Board of Studies) में विशेषज्ञो की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई है। प्रमुख पाठ्क्रम नवाचारों के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के विश्लेषणात्मक, तकनीकी और रोजगार योग्य कौशल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विभाग से अब तक दो शोधार्थियों को पीएच.डी. उपाधि प्रदान की जा चुकी है तथा चार शोध प्रबंध सफलतापूर्वक प्रस्तुत किए गए हैं, जो विभाग की मजबूत शोध संस्कृति को दर्शाता है।

समय के साथ कदम मिलाते हुए विभाग को डीबीटीस्टार कॉलेज योजना के अंतर्गत मान्यता प्राप्त हुई । साथ ही RUSA द्वारा वित्त पोषित अनेक विस्तार गतिविधियाँ, राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठितअतिथि व्याख्यान और अध्ययन भ्रमण आयोजित किए गए। विभाग द्वारा वर्ष 2016, 2024 और 2025 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठियों ने इसे राट्रीय शैक्षणिक मंच पर सशक्त रूप से स्थापित किया।

सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग की पहचान केवलकक्षाओ तक सीमित नहीं है। यहाँ शिक्षा काअर्थ है-अनुभव से सीखना। प्रतिवर्ष आयोजित हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण कार्यक्रम, मशरूम उत्पादन एवं जैवउर्वरक निर्माण जैसे कौशल-आधारित प्रयास विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और उद्यमशील सोच का विकास करते हैं। वे सिकुलर-आर्बस्कुलर माय कोराइजा (भूमि और पौधों की जड़ों के बीच सहजीवी फंगस) जैव उर्वरक उत्पादन इकाई और लिक्विड जैव उर्वरक कॉम्बो छात्रों के लिए सतत स्वरोज़गार के नए अवसर खोलते हैं।

सैद्धांतिक ज्ञान को वास्तविकता से जोड़ने हेत नियमित शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किए जाते हैं, जिनसे विद्यार्थियों को कृषि, पशु स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय स्थिरता की व्यावहारिक समझ प्राप्त होती है।

इस विभाग की सबसे बड़ी उपलब्धि इसके विद्यार्थी हैं।आज विभाग के छात्र एवं पूर्व छात्र भारत तथा विदेशों के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानोंएवं कृषि कॉलेजों में अध्ययन, शोध एवं सेवाएँ दे रहे हैं। यह विभाग की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा और मार्गदर्शन का सजीव प्रमाण है।

समाज के प्रति दायित्व निभाते हुए विभाग द्वारा ग्रामीणएवंअर्ध-शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य एवं जन-जागरूकता शिविर, राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम तथा स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण से जुड़े प्रयास निरंतर किए जाते हैं। साथ ही, जल गुणवत्ता परीक्षण, पर्यावरणीय निगरानी एवं शैक्षणिक संस्थानों को सूक्ष्म जीवविज्ञान परामर्श सेवाएँ प्रदान कर विभाग ने अपने वैज्ञानिक ज्ञान को व्यवहारिक समाधान में बदला है।

आज सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग शैक्षणिक उत्कृष्टता, नवाचार, कौशल विकास और सामाजिक प्रतिबद्धता की मजबूत नींव पर निरंतर आगे बढ़ रहा है। यह विभाग न केवल विद्यार्थियों को शिक्षित करता है, बल्कि उन्हें भविष्य के लिए सक्षम, आत्मनिर्भर और समाज के प्रति संवेदनशील नागरिक बनने की प्रेरणा भी देता है। सूक्ष्मजीवों से आरंभ हुई यह यात्रा, आज वैश्विक मंच तक विद्यार्थियों की सफलता की कहानी बन चुकी है।

स्मरण

मौन में बोलते संवाद

विनोद कुमार शुक्ल का साहित्यिक अवदान

डॉ. शारदा सिंह
अतिथि प्राध्यापक 'हिन्दी'

हिंदी साहित्य में कुछ रचनाकार ऐसे होते हैं जो अपनी उपस्थिति से नहीं, बल्कि अपने अनुपस्थित शोर से पहचाने जाते हैं। वे न तो घोषणाएँ करते हैं, न ही साहित्य को किसी वैचारिक मंच पर खड़ा करते हैं। उनका लेखन जीवन के साथ-साथ चलता है-धीरे, चुपचाप और गहराई से। विनोद कुमार शुक्ल ऐसे ही विरल रचनाकार थे। छत्तीसगढ़ की मिट्टी, साधारण जन-जीवन और आंतरिक संवेदनाओं से निर्मित उनका साहित्य किसी क्षेत्रीय दायरे में सीमित नहीं रहा। उसमें जो चुप्पी है, जो ठहराव है, वह आधुनिक मनुष्य की साझा अनुभूति बन जाती है। यही कारण है कि उनका लेखन स्थानीय होते हुए भी सार्वभौमिक बनता है।

विनोद कुमार शुक्ल का व्यक्तित्व उनके साहित्य की तरह ही आडंबर-रहित था। वे साहित्यिक चकाचौंध, मंचीय प्रसिद्धि और बौद्धिक प्रदर्शन से दूर रहे। यह दूरी किसी संकोच का परिणाम नहीं थी, बल्कि एक गहरे नैतिक अनुशासन का संकेत था। उनके लिए साहित्य आत्म-प्रचार का साधन नहीं, बल्कि आत्म-संवाद की प्रक्रिया थी। उनकी भाषा अत्यंत सरल है, किंतु अर्थ की दृष्टि से अत्यंत गहन। वे यह सिद्ध करते हैं कि साहित्यिक गहराई के लिए भाषिक जटिलता आवश्यक नहीं। उनके वाक्य छोटे होते हैं, पर उनके भीतर जीवन का विस्तृत अनुभव समाया रहता है। पाठक पर भाषा हावी नहीं होती, बल्कि अनुभव स्वयं सामने आ जाता है। उनके उपन्यास-नौकर की कमीज, खिलेगा तो देखेंगे और दीवार में एक खिड़की रहती थी-घटनाओं की बजाय स्थितियों पर आधारित हैं। यहाँ कहानी किसी तीव्र मोड़ से नहीं, बल्कि जीवन की धीमी चाल से आगे बढ़ती है।

'नौकर की कमीज' मध्यवर्गीय मनुष्य की असहायता, व्यवस्था से टकराव और आत्मसम्मान के सूक्ष्म संकट को बिना किसी आक्रोश के प्रस्तुत करता है। 'खिलेगा तो देखेंगे' प्रतीक्षा और अनिश्चितता का उपन्यास है, जहाँ जीवन किसी निष्कर्ष तक नहीं पहुँचता, पर चलता रहता है।

'दीवार में एक खिड़की रहती थी' उनका सबसे प्रतीकात्मक उपन्यास है। यहाँ 'दीवार' जीवन की सीमाओं का और 'खिड़की' उस छोटे-से दृष्टिकोण का संकेत है, जिससे बाहर की दुनिया देखी जा सकती है। यह उपन्यास किसी मुक्ति का दावा नहीं करता, बल्कि सीमाओं के भीतर मनुष्य की स्थिति को समझने का प्रयास करता है। इसी कृति के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनके कहानी-संग्रह -विशेषतः 'महाविद्यालय' और 'पेड़ पर कमरा'-छोटी घटनाओं के माध्यम से बड़े मानवीय सत्य प्रकट करते हैं। उनके पात्र बहुत बोलते नहीं, पर उनकी चुप्पी पाठक से संवाद करती है। लेखक कहीं भी निर्णय नहीं सुनाता; वह पात्रों के साथ खड़ा रहता है।

कविता के क्षेत्र में भी उनका योगदान उतना ही महत्वपूर्ण है। जितना कथाक्षेत्र में है उनके काव्य संग्रह लगभग 'जयहिंद', 'वह आदमी चला गरम कोट पहनकर विचारों की तरह' और 'सब कुछ होना बचा रहेगा' जैसी कृतियों में जीवन की साधारण स्थितियाँ एक गहरी काव्यात्मक संवेदना के साथ उपस्थित होती हैं। यह कविता ऊँचे स्वर में नहीं बोलती, बल्कि जीवन की धीमी धड़कन की तरह पाठक के साथ चलती है। विनोद कुमार शुक्ल को मिला ज्ञानपीठ पुरस्कार उनके समग्र साहित्यिक योगदान की स्वीकृति है। यह सम्मान किसी एक रचना के लिए नहीं, बल्कि कविता, कहानी और उपन्यास-तीनों विधाओं में उनकी दीर्घकालीन, मौलिक और मानवीय साहित्य-साधना के लिए प्रदान किया गया।

23 दिसंबर 2025 को उनके निधन के साथ हिंदी साहित्य ने एक ऐसी रचनात्मक चेतना को खो दिया, जिसने शोर के समय में मौन का महत्व सिखाया। उनका साहित्य आज भी हमें मौन का संप्रेषण सिखाता है। विनोद कुमार शुक्ल का लेखन किसी निष्कर्ष तक नहीं ले जाता-वह हमें प्रश्नों के साथ छोड़ देता है। और शायद यही साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

रजत जयंती पर विशेष कार्यक्रम

रजत जयंती के सफल आयोजन हेतु समिति की पहली बैठक दिनांक 21.8.2025 को अपराह्न 1 बजे आईक्यूएसी सभाकक्ष में तथा दूसरी बैठक 30.8.2025 को 1 बजे आईक्यूएसी सभाकक्ष में ही आहूत की गई। बैठक में संयोजक द्वारा रजत जयंती महोत्सव के उद्देश्य एवं क्रियान्वयन योजना की विधिवत जानकारी दी गई ।

1. रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में कार्यक्रमों की श्रृंखला दिनांक 6 सितम्बर 2025 से शुरू हुई। प्रथम दिवस महाविद्यालय के रवीन्द्रनाथ टैगोर सभागार में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें 25 से अधिक प्रतिभागियों ने छत्तीसगढ़ के स्वर्णिम 25 वर्ष पर अपने विचार रखे। इस प्रतियोगिता में बीएससी तृतीय सेमेस्टर की छात्रा रष्मि साहू प्रथम तथा दिनेश्वरी चन्द्राकर द्वितीय रही। तीसरे स्थान पर एमएससी तृतीय सेमे. की छात्रा साक्षी बांगरे रही। कुल 125 विद्यार्थी शामिल रहे।

महाविद्यालय के डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन सभागार में आयोजित क्विज प्रतियोगिता में चार हाउस के चयनित चार-चार प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कुल 121 विद्यार्थी उपस्थित रहे। प्रथम स्थान पर विवेकानंद हाउस द्वितीय स्थान पर सुभाषचंद्र बोस हाउस तथा तृतीय स्थान पर शहीद भगत सिंह एवं चंद्रशेखर आजाद हाउस संयुक्त रूप से रहे।

2. महाविद्यालय के डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन सभागार में सेमीनार/परिचर्चा एवं वाचनालय में पुस्तक मेला का आयोजन दिनांक 10 सितम्बर 2025 को किया गया। दोनों ही कार्यक्रमों में जिले के जनप्रतिनिधि माननीया श्रीमती सरस्वती बंजारे, अध्यक्ष दुर्ग जिला पंचायत मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुरेन्द्र कौशिक, अध्यक्ष भाजपा, जिला दुर्ग एवं श्री शिवेन्द्र सिंह परिहार, अध्यक्ष जनभागीदारी समिति उपस्थित रहे। सेमीनार में डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव, प्राध्यापक भूगर्भशास्त्र ने छत्तीसगढ़ /2050 एवं डॉ. कुसुमांजलि देशमुख सहायक प्राध्यापक भौतिकी ने विकसित छत्तीसगढ़ /2047 पर पीपीटी के माध्यम से सारगर्भित प्रस्तुति दी।

3. पुस्तक मेले में राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय छः प्रतिष्ठानों ने संदर्भ पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई। सेमीनार/परिचर्चा में कुल प्रतिभागी 103 तथा पुस्तक मेले में कुल 657 विद्यार्थियों ने पंजीकरण करवाया।

4. रजत जयंती महोत्सव के आयोजन के अगले चरण में महाविद्यालय की एन.एस.एस. एवं एन.सी.सी. की इकाईयों ने गोद ग्राम थनौद में रजत जयंती तक के सफर-25 वर्ष पर आधारित नुक्कड़ नाटक, परिचर्चा, पोस्टर प्रतियोगिता एवं जागरूकता रैली का आयोजन किया। इन गतिविधियों का उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य के 25 वर्षों की स्वर्णिम उपलब्धियों एवं विकास यात्रा को जन-जन तक पहुंचाना रहा। परिचर्चा, पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन ग्राम थनौद के शास.उ.मा. शाला के विद्यार्थियों के बीच किया गया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। इन कार्यक्रमों में एन.एस.एस. एवं एन.सी.सी. से महाविद्यालय के कुल 50 छात्र-छात्राएं एवं विद्यालय के 100 से अधिक विद्यार्थी शामिल हुए। साथ ही नुक्कड़ नाटक एवं जागरूकता रैली में गांव के सामान्य ग्रामीण भी सम्मिलित हुए।

5. दिनांक 12 सितंबर 2025 को महाविद्यालय में सन् 2000-2001 के पश्चात् प्रवेशित भूतपूर्व छात्रों का सम्मेलन (एलुमनी मीट) का आयोजन प्रातः 11 बजे से डॉ. राधाकृष्णन

सभागार में किया गया। इस आयोजन में मुख्य अतिथि श्री जितेन्द्र यादव, सभापति दुर्ग जिला पंचायत, दुर्ग एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री धनश्याम साहू मण्डल अध्यक्ष जेवरा-सिरसा तथा महाविद्यालय के जनभागीदारी अध्यक्ष शिवेन्द्र सिंह परिहार उपस्थित थे। आयोजन में श्री नरोत्तम साहू सुश्री पारूल पाण्डेय आदि भूतपूर्व विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक प्रस्तुति दी। हिन्दी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी ने छत्तीसगढ़ के स्वर्णिम 25 वर्षों की विकास यात्रा को एक विडियो डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से दिखाया। इस अवसर पर कुल 132 पूर्व छात्र कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

6. 12 सितंबर 2025 को दुर्ग जिला रोजगार नियोजन कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में रवीन्द्रनाथ टैगोर सभागार एवं वाचनालय में वृहद रोजगार मेले का आयोजन किया गया। इस रोजगार मेले में बैकिंग, फाइनेंस, मैनेजमेंट, हॉस्पिटलिटी सिक्योरिटी एवं नर्सिंग क्षेत्र की बीस से अधिक निजी क्षेत्र की कम्पनियों ने स्टॉल लगाया। मेले में दुर्ग-जिले के शासकीय 21 महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कुल पंजीकृत 565 विद्यार्थियों में से 335 विद्यार्थियों का रोजगार हेतु चयन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री गजेन्द्र यादव जी माननीय मंत्री स्कूल शिक्षा, ग्रामोद्योग विधि एवं विधायी कार्य ने अपने हाथों से 10 युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान किया। माननीय जिला कलेक्टर श्री अभिजीत सिंह ने भी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने हेतु रोजगार मेले का दौरा किया। रोजगार मेले में दुर्ग जिला पंचायत सभापति श्री जितेन्द्र यादव जी एवं महाविद्यालय

जनभागीदारी समिति अध्यक्ष श्री शिवेन्द्र सिंह परिहार जी उपस्थित रहे।

7. रजत जयंती थीम पर 2025 को अपराह्न 1 बजे से शासकीय संगीत महाविद्यालय, दुर्ग के संयुक्त तत्वावधान में वार्षिकोत्सव का आयोजन शहीद वीर नारायण सिंह सभागार में अपराह्न 1.00 बजे से किया गया। कार्यक्रम में श्री गजेन्द्र यादव माननीय मंत्री स्कूल शिक्षा, ग्रामोद्योग, विधि एवं विधायी कार्य मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में दुर्ग जिला पंचायत सभापति श्री जितेन्द्र यादव एवं अध्यक्ष जे.बी.एस. श्री शिवेन्द्र सिंह परिहार उपस्थित रहे। उक्त अवसर पर छत्तीगसढ़ी वेषभूषा एवं छत्तीसगढ़ी पकवानों की खुशबू से महाविद्यालय कैम्पस सुवासित रहा। विद्यार्थियों ने छत्तीसगढ़ी परंपरागत गीत एवं नृत्यों से अंचल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन किया। पण्डवानी, भरथरी, करमा ददरिया, सुवा, नाचा एवं आदिवासी नृत्यों की मनमोहक प्रस्तुतियों ने वार्षिकोत्सव की गरिमा बढ़ाई।

शासकीय महाविद्यालय में आयोजित इस रजत जयंती समारोह (5 सितम्बर से 12 सितम्बर) ने विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं क्षेत्र के नागरिकों के बीच ना केवल छत्तीसगढ़ के स्वर्णिम 25 वर्षों की विकास यात्रा की जागृति पैदा की अपितु छत्तीसगढ़ के बहुमुखी विकास के अनंत संभावनाओं के द्वारों को भी रेखांकित किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह ने इन महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित आयोजनों हेतु आयोजन समिति महाविद्यालय के समस्त स्टॉफएवं विद्यार्थियों को बधाई प्रेषित की । --ooo--

व्यंजना पत्रिका समिति

प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह एवं अशैक्षणिक स्टाफ

R.O. NO./13664/1

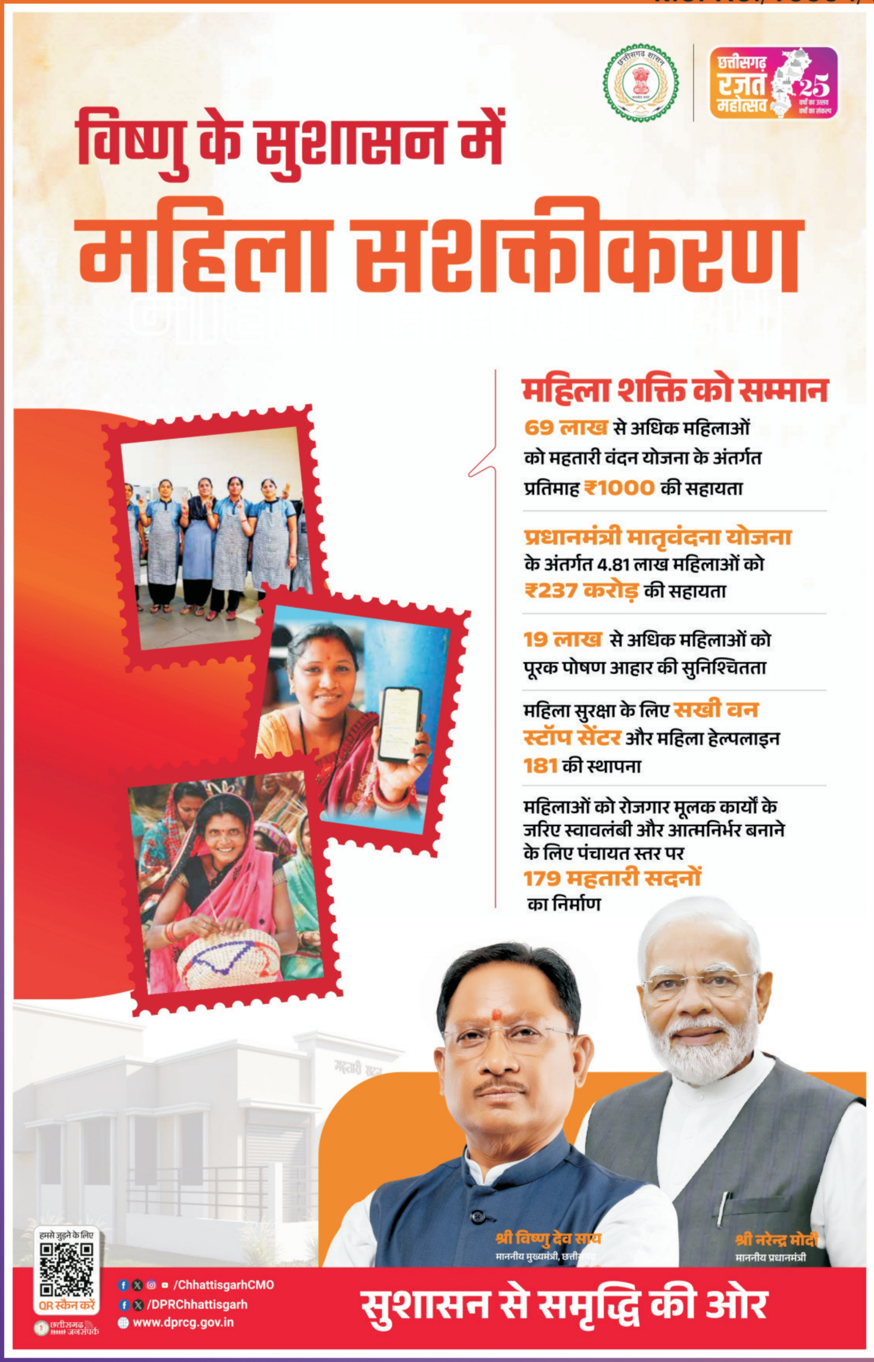

प्राचार्य, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) द्वारा प्रकाशित तथा विकल्प विमर्श द्वारा मुद्रित।
फोन- 0788 2211688 ई मेल:pprinci2010@gmail.com वेबसाइट www.govtsciencecollegedurg.ac.in